ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र

मई २०१४

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

महान शास्त्रार्थ महारथी, गुरुकुल वृन्दावन, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि अनेक गुरुकुलों के आदि – संस्थापक

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

अभिविनय

श्रीमद्दयानन्द सरस्वती

ओं शं नों मित्रः शं वरुणः शं नों भवत्वर्य्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥ १॥ ऋ.

व्याख्यान - हे सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, हे नित्यशुद्धमुक्तस्वभाव, हे अद्वितोयानुपमजगदादिकारण, हे अज, निराकर, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारिन्; हे जगदीश, सर्वजगदुत्पादकाधार; हे सनातन, सर्वमंगलमय, सर्वस्वामिन् हे करूणाकरास्मत्पितः; परमसहायक; हे सर्वानन्दप्रद सकल दुःखविनाशकः हे अविद्यान्धकारनिरमूलक, विद्यार्कप्रकाशक; हे परमैश्वर्यदायक, साम्राज्यप्रसारक; हे अधर्माद्धारक, पतितपावन, मान्यप्रद; हे विश्वविनोदक; विनय विधिप्रद ; हे विश्वासविलासक विनय विधि प्रद, हे निरंजन, नायक, शर्मद, नरेश, निर्विकार; हे सर्वन्तर्यामिन्, सदुपदेशक, मोक्षप्रद; हे सत्यगुणाकर, निर्मल, निरीह, निरामय निरूपद्रव, दीनदयाकर, परमसुखदायक, दारिद्रयविनाशक, निर्वैर विधायक, सुनीतिवर्द्धक हे प्रीतिसाधक राज्य विधायक, शत्रुविनाशक; हे सर्वबलदायक, निर्बलपालक; हे सुधर्मसुप्रापक, हे अर्थसुसाधक, सुकामवर्द्धक, ज्ञानप्रद; हे सन्ततिपालक, धर्मसुशिक्षक, रागविनाशकः; हे पुरुषार्थप्रापक, दुर्गुणनाशक, सिद्धिप्रद; हे सज्जनसुखद, दुष्टसुताडन, गर्वकुक्रोधकुलोभविदारक; हे परमेश, परेश, परमात्मन्, परब्रह्मन्: हे जगदानन्दक, परमेश्वर, व्यापक सूक्ष्माच्छेद्य, अजरामृताभय निर्बन्धनादे, हे अप्रतिमप्रगाव, निर्गुणातुल विश्वाद्य, विश्ववन्द्य, हे विद्वद्विलासक, इत्याद्यनन्तविशेषणवाच्य; हे मंगलप्रदेश्वर! आप सर्वथा सब के निश्चित मित्र हो। हमको सत्यसुखदायक सर्वदा हो। हे सर्वोत्कृष्ट, स्वीकरणीय, वरेश्वर! आप वरुण अर्थात् सब से परमोत्तम हो, सो आप हमको परम सुखदायक हो। हे पक्षपातरहित, धर्म्मन्यायकारिन् ! आप अर्य्यमा (यमराज) हो इससे हमारे लिये न्याययुक्त सुख देने वाले आप ही हो। परमैश्वर्य्यवन् इन्द्रेश्वर! आप हमको परमैश्वर्ययुक्त शीघ्र स्थिर सुख दीजिए।

हे महाविद्यावाचोधिपते, बृहस्पते, परमात्मन्! हम लोगों को (बृहत्) सब से बड़े सुख को देने वाले आप ही हो। हे सर्वव्यापक, अनन्तपराक्रमेश्वर विष्णो! आप हमको अनन्त सुख देओ। जो कुछ मांगेंगे सो आप से ही हम लोग मांगेंगे। सब सुखों को देने वाला आप के बिना कोई नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आप का ही आश्रय है; अन्य किसी का नहीं, क्योंकि सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयामय सबसे बड़े पिता को छोड़ के नीचे का आश्रय हम कभी न करेंगे। आप का तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते सो आप सदैव हम को सुख देंगे, यह हमको दृढ़ निश्चय है।

पद्यानुवाद

मित्र करे कल्याण हमारा

मित्र करे कल्याण हमारा, वरुण करे कल्याण सदा।
यम कल्याण करे हम सबका, इन्द्र करे कल्याण सदा॥
बृहस्पतिः हम सबका स्वामी, विष्णु उरुक्रम शांति करे।
घर-घर शांति विराजे हरदम, सुख कल्याण सदा बरसे॥

'आर्याभिविनय' से साभार

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११४ अंक ५
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १९०
संवत - २०७१
सन् - २०१४ मई

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२२१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
email : jasysinghgaekwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अभिविनय	श्रीमद्दयानन्द सरस्वती	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	दयानन्द सरस्वती	न्या.मू. एन.के. गुप्ता	५
४.	अमृत बरसे.....	देवनारायण भारद्वाज	८
५.	वेदों का महत्व	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार	१०
६.	महात्मा गांधी.....	डॉ. विवेक आर्य	१२
७.	वैज्ञानिक युग में....	अर्जुन देव	१४
८.	काव्य जगत १. हे भारत माँ के सपूतों - राजेन्द्र आर्य २. अपकर्ष - ओमप्रकाश बजाज		१६
९.	स्वास्थ्य चर्चा - दहीं की ...	मनोहर अग्रावत	१७
१०.	आर्य जगत के समाचार		१८
११.	सभा क्षेत्र की सूचनाएं व समाचार		२१
१२.	आर्य समाज मन्दिर वर्धा के पदाधिकारी		२३

(टीप- प्रकाशित कृतियों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं इनसे 'आर्य सेवक' का सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती : बहुमुखी व्यक्तित्व

आर्य समाज रत्नगर्भा है । इसकी कोख से न जाने कितने रत्न उत्पन्न हुए और उनके कार्यों के कारण आर्यसमाज के यश की वृद्धि हुई है । ऐसे ही दैदीप्यमान नक्षत्र को आज स्मरण कर लें । उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से कुछ प्रेरणा लेकर अपन क्या योगदान दे सकते हैं इस बारे में मंथन करें ।

एक उच्च ब्राह्मण कुल में माघ कृष्णदशमी संवत १९१८ को लुधियाना में जन्मा बालक नेतराम से कृपाराम बनते हुए स्वामी दर्शनानन्द बन गया । पिता पं. राम प्रताप भी धन्य हुए और अनेक शिक्षा गुरू जैसे पं. हरिनाथ जी आदि तथा सन्यास दीक्षा देने वाले श्री स्वा. अनुभावनन्द भी गौरवान्वित हुए हैं ।

अपने प्रारम्भिक जीवन में उन्होंने फारसी पढ़ी । फारसी के प्रसिद्ध ग्रथों 'गुलिस्ताँ' तथा 'बोस्ताँ' को पढ़ने को अवसर मिला । इन्हीं दिनों उन्होंने 'सिद्धान्त कौमुदी' भी पढ़ी । वैराग्य तथा यायावर वृति होने के कारण उन्हें देशाटन करने का लाभ मिला । उनके स्वयं के कथनानुसार उन्होंने महर्षि दयानन्द के ३७ व्याख्यान अमृतसर में सुने थे । एक दो नहीं ३७ व्याख्यानों से उनके जीवन का कायाकल्प होना स्वाभाविक रहा। उन्होंने न केवल दर्शनों का अध्ययन किया अपितु उन महारथ भी प्राप्त की । इसी कारण ही वे शीर्षस्थ शास्त्रार्थ महारथी बन सके ।

प्रकाशन :- स्वामी जी को आगे चलकर यह अनुभव हुआ कि संस्कृत शिक्षण के लिए आवश्यक ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं । अतः उन्होंने उस कमी को पूरा करने के लिए 'तिमिर नाशक' यंत्रालय की स्थापना काशी रहते हुए की । घर के आसूदा होने के कारण उन्होंने इसमें अपनी ही राशि लगाई, यह एक विलक्षण कार्य किया ।

साहित्य सृजन :- स्वामी जी की लेखनी से जो कृतियां आर्य जगत में आई हैं वे न केवल गणनात्मक रूप से अपितु गुणात्मक रूप से अद्वितीय हैं । बताया जाता है कि वे प्रतिदिन एक ट्रेक्ट लिखते थे, व छपाते थे । उसके ट्रैक्टों को कालान्तर में संकलित कर प्रकाशित किया गया है । छोटे छोटे ट्रेक्टों में गूढ़ विचार उपलब्ध हैं । एक कहावत है कि 'संत्सइया के दोहरे अरू नाविक के तीर देखन में छोटे लगें घाव करें गमीर ।' यह उक्ति यहां पर लागू होती है । एक जमाना था जब इन ट्रैक्टों को ध्यान पूर्वक पढ़ा जाता था । इनसे पाठकों को सारपूर्ण विचार मिलते थे । कालान्तर में उन्होंने दर्शनों पर भी कार्य किया जिनका प्रकाशन भी हुआ । उपनिषदों की व्याख्याएं लिखीं । मनुस्मृति व गीता पर भी लिखा इस्लाम, इसाई जैन धर्मों पर भी समीक्षात्मक टीकाएं लिखीं । उनके समस्त ग्रंथ दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध प्रकाशित हुए । आर्य समाज के प्रसिद्ध लेखक डा. भारतीयजी ने लिखा है "आज के आर्यसमाजी भी स्वामी दर्शनानन्द की कृतियों में उतनी ही रूचि लेते हैं जितना आधीसदी पूर्व पाठक लेता था । यही इस लेखक की लोक प्रियता का प्रमाण है ।" दृष्टव्य है आर्य समाज का इतिहास भाग ५।

शास्त्रार्थ महारथी :- आर्यसमाज में शास्त्रार्थों का प्रारम्भ तो महर्षि दयानन्द से ही होता है । कालान्तर में आये मनीषियों ने इस क्षेत्र में अपने अपने झुण्डे गाड़े हैं । स्वामी दर्शनानन्द जी का झण्डा भी खूब फहराया । उन्होंने सनातनी विद्वानों से शास्त्रार्थ तो किए ही हैं साथ ही मौलवी अब्दुल हमीद, पादरी ज्वालासिंह, जैनी गोपाल दास वरैया, आदि से शास्त्रार्थ किए थे।

पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन:- १८८९ में उन्होंने 'तिमिर नाशक' का प्रकाशन प्रारंभ किया और इसी क्रम के 'आर्यावर्त' 'वेद प्रचारक' 'भारत उद्धार' आदि से लेकर १९०८ में 'वैदिक फिलासफी' आदि प्रकाशित कीं ।

गुरूकुलों के संस्थापक :- सिकन्दराबाद तथा बदायूं में गुरूकुलों के स्थापना की । कालान्तर में आर्यजगत के प्रसिद्ध गुरूकुल ज्वालापुर की उन्होंने स्थापना की । ज्वालापुर गुरूकुल की स्थापना के समय यह एक सर्वथा निशुल्क संस्था थी । इस कारण इसके व्यय भार न उठा सकने वालों का कितना लाभ हुआ वह सहज ही समझा जा सकता है । कालान्तर के यद्यपि व्यवस्था को संशोधित किया गया । इस संस्था द्वारा जो योगदान दिया गया है वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है । एक दो नामों का उल्लेख करना अच्छा होगा । डा. सूर्यकान्त विद्यामास्कर इसी संस्था की उपज थे जिन्होंने 1937 में आक्सफोर्ड वि.विद्यालय से डाक्टोरेट की उपाधि प्राप्त की । वे इन्डोलोजी के प्रोफेसर कई विश्वविद्यालयों में रहे । एक दूसरा नाम है डा. हरिदत्त शास्त्री का । आप आगरा, कानपुर आदि के प्रसिद्ध कॉलेजों में विभागाध्याक्ष रहे । उन्होंने मीमांसा, ग्रहसूत्र आदि पर भी कार्य किया । डा. हरिदत्त की एक और विलक्षणता थी शास्त्रार्थ करने की महाराथ । "आप का शास्त्रार्थ एक बार प्रसिद्ध सनातनी विद्वान स्वामी करिपात्री जी से हुआ। इस शास्त्रार्थ में श्रोताओं पर उनकी अगाध विद्वत्ता का सिक्का जम गया था ।" दृष्टव्य है आर्य समाज का इतिहास भाग-3 इसी संस्था के एक स्नातक थे पं. प्रकाशवीर शास्त्री । वर्तमान में जाना पहचाना व्यक्तित्व था जिसने आर्यसमाज और वर्तमान राजनीति में अपना विशिष्ट नाम बना लिया था । पर होनी को कुछ और ही मान्य था । उसने हमसे उन्हें छीन लिया । अस्तु । उक्त गुरूकुल के बहुत सारे सुयोग्य विद्वान आदि हुए हैं ।

लिखने को तो बहुत है । पर हमारी सीमा है । 11 मई 1913 को हमारे चरित्र नायक का देहावसान हो जाता है । यदि हमारी व्यवस्था होती कि व्यक्ति काम भी करे पर उसके स्वास्थ्य की ओर ध्यान भी दिया जाए जिससे उनसे अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके । ऐसा हो नहीं सका और वह रत्न हमारे हाथों से निकल गया । उसकी पूर्ति तो नहीं हो सकती हैं परन्तु भविष्य के लिए बहुत कुछ शिक्षा ली जा सकती हैं ।

जयसिंह गायकवाड़

.....***.....

स्वामी दयानन्द सरस्वती

न्यायमूर्ति श्री एन.के. गुप्ता, न्यायाधीश, म.प्र. उच्च न्यायालय, जबलपुर

(१९० वीं जयन्ती पर दिए गए उद्‌बोधन का संक्षिप्त रूपान्तर)

आज इस दयानन्द भवन स्थित आर्य समाज मंदिर में परम आदरणीय पथप्रदर्शक वेदवेत्ता, आर्य समाज के जनक, ब्रह्मनिष्ठ, प्रातः स्मरणीय पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयंती पर उनका स्मरण एवं उनके मार्ग का समसामयिक चिन्तन करने के लिये हम एकत्र हुए हैं। वेदों के सम्बन्ध में आप लोग स्वयं ज्ञानी हैं। अतः इस विषय पर विस्तृत कहना आवश्यक नहीं है। इसी प्रकार आदरणीय स्वामी जी के जीवन चरित्र एवं कृतित्व से भी आप परिचित हैं अतः इस विषय पर भी दीर्घ चर्चा करना उचित न होगा। स्वामीजी के वचनामृत हमें आज के संदर्भ में देखना चाहिये कि हम कहां थे, कहां तक आ गये तथा कहाँ हमें जाना है।

महामना स्वामीजी का जन्म दिनांक 24 फरवरी 1824 में तदनुसार विक्रम संवत् 1880 की फाल्गुन कृष्णपक्ष की दशमी, मंगलवार को गुजरात के सौराष्ट्र वाले हिस्से में, जो उस समय धारंगधरा देश कहलाता था, मौरवी प्रांत में 'टंकारा' नामक स्थान पर हुआ था। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा के बारे में स्वयं पूना में बताया था। जन्म के समय की तिथि या विक्रमी सम्वत् के माह का उल्लेख नहीं मिलता है, परन्तु खगोलशास्त्र में एक शब्द है 'मेटोनिक सायकल' जिसमें कहा गया है कि ग्रेगोरियन कैलेन्डर के परिप्रेक्ष्य में ग्रहों की स्थिति के अनुसार चन्द्र कैलेन्डर में हर 19 वें वर्ष समानता आवेगी। आज हम स्वामीजी का 190 वां जन्मदिन मना रहे हैं अतः यह समानता की दसवीं आवृति है यहां तक कि आज मूल नक्षत्र भी है जिसके कारण से जातक का नाम मूलशंकर रखा गया। अतः उनके जन्म के लिये निम्न पंक्तियां कहना सटीक होग :-

'संवत अठारह सौ असी, हरने जन की पीर।
फाल्गुन कृष्णा दशमी, स्वामी लियो शरीर ।।'

आदरणीय स्वामीजी के लीलामृत के बारे में इतना ही। अब कृतित्व की ओर बढ़ना होगा। स्वामीजी के पूर्ण जीवन का सार एवं मात्र मुख्य कार्य को ही देखें, उसके बारे में चर्चा नियत समय में समाप्त न हो सकेगी अतः यहां मात्र दो प्रमुख कार्य, पहला 'आर्य समाज की स्थापना' एवं दूसरा वेदों के सिवाय अन्य किसी विधि विधान का विरोध, जो वेदों के प्रावधानों के अनुकूल नहीं है, इसमें कुरीतियों का विरोध भी मूर्तिपूजा का विरोध भी शमिल है, पर ही विचार हो सकेगा।

समाज का प्राथमिक उद्देश्य है कि आर्य पूरे संसार के प्रति अच्छे रहें तथा मानवता के प्रति बेहतर भौतिक, आत्मिक एवं सामाजिक परिस्थितियां बनायें।

आर्य समाज बनाने का उद्देश्य ऐसे लोगों को साथ में लाना था ताकि सामाजिक न्याय, साम्या, सभी मानवों, राष्ट्रों यहां तक कि लिंग भेद के बिना समानता हो सके। अतः यह कहा गया कि आर्य समाज के सदस्यों की कोई जाति न होगी।

वस्तुतः आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द के पूरे जीवन का निचोड़ है। जिन कुरीतियों एवं वेद विरूद्ध बातों का विरोध उन्होंने किया व ऐसे सिद्धान्तों को चुनौती दी, जो वेद विरूद्ध थे तब वे उन कुरीतियों से मुक्त वेद पथ के अनुगामी लोगों को एक साथ लाना चाहते थे और यही आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य था। आर्य राष्ट्रवाद एवं धर्मनिरपेक्षवाद भी आर्य समाज के लिये आवश्यक तत्व हैं जिन पर भी चर्चा की जा सकती है .....।

स्वामीजी ने देवदासी प्रथा का विरोध किया। उनका कहना था कि एक ओर आप दलितों को अस्पृश्य मानते हैं तो दूसरी ओर उनकी कुआंरी कन्याओं को मंदिर में दान करा लिया जाता है तथा समाज एवं धर्म के ठेकेदार उनका दैहिक शोषण करते थे, क्या इसकी आज्ञा धर्म देता है ?

महर्षि दयानन्द ने एक अति महत्वपूर्ण विज्ञापन में लिखा था :- "सबको विदित हो कि जो जो बातें वेदों की होकर उनके अनुकूल है, उनको मैं मानता हूँ तथा विरूद्ध बातों को नहीं। इससे जो जो मेरे बनाये 'सत्यार्थ प्रकाश' वा 'संस्कार विधि' आदि ग्रन्थों में ग्राह्य सूत्र या मनुस्मृति के वचन में से बहुत से वचन लिखे हैं, वे उन ग्रन्थों के मतों को जानने के लिये लिखा है उनमें से वेदार्थ के

अनुकूल का साक्षिवत् प्रमाण और विरूद्ध का अप्रमाण मानता हूँ।"

यह विज्ञापन ग्रन्थ 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन' 'प्रथम भाग' से लिया है .....।

तब क्या वैष्णव मात्र तिलक छाप से ही बता सकेगा कि वह वैष्णव है ? (इसी प्रकार) स्वामीजी ने प्रत्येक मानव को वेद पाठन करने एवं ज्ञान अर्जन का अधिकारी माना है, तब वेदों के ज्ञाता पण्डित द्वारा शिखा रखने मात्र दम्भ का प्रतीक होकर स्वामीजी के समानता के सिद्धांत के विपरीत है ।

महर्षि दयानन्द 'सती प्रथा' के विरोधी थे । वस्तुतः 'सती प्रथा' 'बाल विवाह' से जुड़ी हुई कुप्रथा थी । वेदों में न तो बाल विवाह न ही सती प्रथा का आख्यान मिलता है ।

महर्षि दयानन्द ने माना कि जातिवाद या जातिविभेद से भी धर्मों को नुकसान हुआ दुनिया विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों में बंट गई। इस्लाम, ईसाईयत, जैन, बौद्ध व सिख मतों में जाति प्रथा नहीं होना चाहिये थी, परन्तु अभी भी मुस्लिमों में 'शेख' व 'सैयद' दूसरों से उच्च होते हैं । ईसाईयत में जाति से नहीं पर रंग व नस्ल में भेद होना कहा जाता है । सिख में योद्धा पगधारी अलग हो गये, निहंग या साधरणजन अलग हो गये । जैन धर्म वस्तुतः मात्र वणिकों न ही स्वीकारा एवं अन्य जाति के लोगों को इसमें प्रविष्ट ही नहीं होने दिया गया ।

स्वामीजी के अनुसार जाति कार्य से होना चाहिये थी, पर वह धर्म से हो गई, यदि सभी मानव एक ही परमात्मा के अंश हैं तो एक अंश को वेद पठन का अधिकार था तथा अन्य अंशों को नहीं, क्यों?

मात्र इसलिये कि सभी अन्य जाति के लोगों पर एक जाति के लोगों का ज्ञान के अनुसार वर्चस्व बना रहे ।

यही कारण था कि स्वामीजी ने कहा कि प्रत्येक आर्य स्वयं वेदपाठी होकर अपना यज्ञ स्वयं कर सकता है ।

अपना वर्चस्व कायम करने की चाह में न सिर्फ जातिवाद पनपा, बल्कि अपना वर्चस्व कायम में वेदपाठी लोगों ने हिन्दू धर्म के भीतर शैव, वैष्णव, ब्रह्म सम्प्रदाय अलग किये । शैव में भी भैरव, शाक्त व गनपत सम्प्रदाय और हो गये । धर्म के नाम पर फिर जैन, बोद्ध व सिख धर्म अलग हो गये । इस प्रकार धर्म के नाम पर राष्ट्र सम्प्रदायों में विभक्त हो गया ।

अतः स्वामी का सपना था कि जब ईश्वर एक है तथा हर पंथ के माध्यम से उसी में अन्ततः लीन होना है तब धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप को माने एवं ईश्वर प्राप्ति का प्रयास करें । अतः प्रत्यके आर्य को धर्म निरपेक्ष होने को कहा गया है ।

विषय की अगली कड़ी के रूप में मैं मूर्तिपूजा की ओर आता हूँ । लीलामृत की दृष्टि से यह कहा जाता है कि बालक मूलशंकर ने अर्थात् स्वामीजी ने देखा कि शिव की पिण्डी से चूहा प्रसाद ले जा रहा है और शिव अपने चढ़ावे की रक्षा नहीं कर रहे तब वहां शिव हैं कहाँ । अतः मूर्तिपूजा के वे विरूद्ध हो गये...। स्वामी जी का उत्तर था :-

"न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृण्मये ।
भावे हि विद्यते देवस्तमाद् भावो हि कारणम ।।"

अर्थात् हमारा भाव प्रमुख है । भाव से ईश्वर दिखता है वह तो सामान्य काष्ठ, पत्थर व मिट्टी में भी है, पर भौतिक वस्तु के पूजने से वह प्राप्त कैसे होगा ? इसके लिये भाव चाहिये.....।

वस्तुतः मानव के जीने का लक्ष्य क्या है ? उत्तर मिलेगा अन्ततः मोक्ष । पर मोक्ष कैसे मिलेगा ? उत्तर ईश्वर की आराधना से । आराधना कैसे?.....।

पुस्तक योग मीमांसा-लेखक स्वामी सत्यपति ने लिखा है कि समाधि के स्वरूप के लिये सूत्र "तदेवार्थमात्र निर्भास स्वरूप शून्यमिव समाधिः" की व्याख्या में स्वामीजी ने कहा कि अग्नि के बीच जैसे लोहा अग्निरूप हो जाता है, वैसे ही परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय होकर उसकी आत्मा परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप आनन्द व ज्ञान से भर जाती है तब यह समाधि है । इस सम्बन्ध में मैं एक किस्सा सुनाता हूं । .....।

(परन्तु) कुछ ही दिन बाद व्यंगकार शरद जोशी की एक रचना पढ़ने को मिली । उसका सार यह है कि एक कस्बे का कर्णधार बड़े शहर में गया तो उसे बताया गया कि लोकमान्य तिलक ने समाज के हर वर्ग को एकत्र करने के लिये गणेशोत्सव प्रारंभ किये हैं अतः शहर में रोज विभिन्न कार्यक्रम हो रहे थे तथा नागरिक एकत्रित एवं संयुक्त हो रहे थे । उन्होंने कस्बे में जाकर वही परंपरा शुरू की । दो तीन साल बाद उनके एक महत्वाकांक्षी अनुयायी ने कस्बे के दक्षिण भाग में अपना कार्यक्रम इस आधार पर पृथक किया कि वहां के लोगों को मूल स्थान दूर पड़ता था । दो तीन साल बाद कर्णधार का एक अनुयायी ने बताया

कि दूसरा गणेशोत्सव आयोजन बड़ा हो गया वहां की प्रतिमा आकार में दो गुनी है । शरद जोशी ने लेख का समापन ऐसे किया कि कस्बे अमुक गली के गणेश, तमुक गली के गणेश, अमुक कूचे के गणेश, इस प्रकार पचासों जगह आयोजन होने लगे । कहीं 10 फिट की मूर्ति तो कहीं उससे भी बड़ी । उस साल सारी मूर्तियों के विसर्जन के बाद जानवरों के पानी पीने के तालाब में पानी ही नहीं बचा ।

इस प्रकार एकता का उद्देश्य तो विफल हुआ ही, परिणाम में आयोजकों, जेबकतरों, तमाशाबीनों ने कमाया । लोग एकत्र कम हुये, भजन व आरती के रिकार्ड बजाकर पूजा व भजन के कार्यक्रम संपन्न मान लिये गये.....। परन्तु उस समय का पुजारियों का आचरण स्वामी जी ने अपने प्रवचन में बताया है कि पहले कोई मूर्ति निर्जन स्थान पर गाड़ दी जाती थी फिर बारिश गिरकर घास उग जाने के बाद कोई कहता था कि मुझे सपना आया है कि अमुक देवता गांव पर कृपा करना चाहते हैं । उनकी मूर्ति निकालकर पूजा करें तथा उसकी बतायी जगह पर मूर्ति निकल भी आती थी । मंदिर का निर्माण एवं मूर्ति की पूजा, चढ़ावा आदि की कार्यवाही शुरू । कुल मिलाकर बड़ी भीड़, धक्का मुक्की । प्रतिमा के आगे पुजारी आधा मिनट खड़े नहीं होने देते तब ध्यान व पूजा का तो प्रश्न ही नहीं है । एक ओर तो पूजा में सामग्री एवं तरीके को मान्यता दी जाती है तो दूसरी ओर भक्त की पूजा सामग्री एक ओर डाली तथा उसे प्रसाद देकर कहा आगे बढ़ो दूसरे को आने दो ।

कुल मिलाकर जिस साकार पद्धति को भक्तों को, अक्षर ज्ञान देने की तरह शुरू किया था वह व्यवसायीकरण से विफल हो गई तथा भक्त वहीं अटक कर रह गया । किसी जिज्ञासु ने कहा मुझे इससे कैसे व कब तक भगवत् प्राप्ति होगी तो उत्तर मिला कि मोक्ष होने में जन्म जन्मांतर लगते हैं इस प्रकार साकार पद्धति मात्र कर्मकाण्ड बनकर रह गई । स्वामीजी इस प्रकार के कर्मकाण्ड व पाखण्ड के विरूद्ध थे । उनका कहना था कि कर्मकाण्ड के वे विरोधी नहीं है । यदि प्रत्येक आर्य स्वंय वेदपाठी होकर ज्ञानवान है तथा यज्ञ करता है तो यज्ञ तो पर्यावरण के लिये आवश्यक है । खुशबू सेंट छिड़कने से आ सकती है पर मंहगा सेंट हर घर में कहां से आ सकता है । यज्ञ करने पर अग्नि वायु का साधन बनती है । अग्नि से गर्म वायु ऊपर उठकर वातावरण में जाती है तथा घर में स्वच्छ वायु प्रवेश करती है, पर वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे । उनका अपने प्रवचनों में कहना था कि मूर्तिपूजा जैन धर्मावलंबियों ने चलायी । इस तरह की नग्न मूर्ति का ध्यान यदि कोई महिला करे तो बजाय ईश्वर से साक्षात्कार होने के उसका मन उत्तेजित होकर ईश्वर की राह से भटक सकता है । उनका कहना था कि कण कण में ईश्वर है तो मूर्ति के कण में भी है पर मात्र इस कारण से मूर्तिपूजा क्यों ?

इस तारतम्य में कबीर की फटकार याद की जा सकती है :-

"पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़"

यदि छोटे पत्थर से पूजने पर भगवान मिलेंगे तो पहाड़ पूजने पर तो न जाने क्या हो जावेगा ।

वस्तुतः ईश्वर को पाने के लिये कोई पाखण्ड या ढकोसला करने की जरूरत नहीं है । वेदों में इसके लिये मनुष्य को अपना आचरण तदानुसाद बनाने के लिये कहा गया है..... । इस संबंध में संत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी समर्थ रामदास की मीमांसा "दासबोध" पठनीय है । ऋग्वेद की ऋचा 1.105.15 को उद्धरत कर स्वामीजी ने लिखा है कि किसी मनुष्य के पिछले पुण्य इकट्ठे होने से विशेष शुद्ध क्रियमान कर्म करने के बिना परमेश्वर की दया नहीं होती .....। सबसे सममाव रखें, अपने कर्म, अकर्म की तरह करें तथा ईश्वर की आराधना, वेदों का पठन पाठन एवं पालन करें । कुल मिलाकर वर्ष 1877 में लाहौर की सभा में आर्य समाज के जो मुख्य लक्ष्य सुनिश्चित किये गये थे, उन्हें पूरा करें । समय, युग बदलने से अब वर्तमान युग में वर्तमान के पाखण्ड को समाप्त करवायें एवं कुरीतियां मिटाने में जुटें तभी स्वामीजी को याद करना सार्थक होगा।

अन्त में, मैं कहूंगा कि स्वामीजी ने अपनी इह लीला इन शब्दों के साथ समाप्त की "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" वे ईश्वर से साक्षात्कार कर चुके थे तथा तपोबल से जहर का असर समाप्त कर सकते थे, परन्तु असली वेदपाठी की तरह उन्होंने फल की कामना न कर फल ईश्वर के हाथ छोड़ दिया ।

आज ऐसे महामना, युगपुरूष, आर्यसमाज सृष्टा को हम सबकी ओर से सादर नमन् ।

म.प्र. उच्च न्यायालय, जबलपुर

.....***.....

भक्ति परमात्मा की खुशामद नहीं
प्रत्युत आत्मा की खुराक है !

अमृत रस बरसे जग चखने को तरसे

देवनारायण भारद्वाज

"माताजी रोज सुबह घर में हवन करती थीं और एक बड़े पीतल के गिलास में से पानी लेकर आचमन करती थीं । वह पीतल का गिलास उनकी जीवन में सदा याद दिलाता था कि कैसी-कैसी मुसीबतें आती हैं, जाती हैं, घबराना नहीं चाहिए।" ये पंक्तियाँ उद्धृत की गयी हैं अस्सी वर्षीय आर्य संन्यासी स्वामी बलराम निर्वृत्तानन्द सरस्वती जी के लेख से जो आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) की मासिक पत्रिका "स्वस्ति पन्थाः" के अप्रैल 2007 के अंक में छपा है । इस लेख में उन्होंने पूज्य पिता स्व. जगतराम सेठी के आर्य बनने की कहानी सुनायी है, कि किस प्रकार वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम, आर्यसमाज के प्रगति-अभियान, स्त्री-शिक्षा और अछूतोद्धार के क्रान्तिकारी आन्दोलन में अपने युवाकाल से ही व्यस्त हो गये थे, और हर प्रकार के अभावों व संघर्षों को झेलते हुए न केवल सफल ही हुए थे, प्रस्तुत अमृतत्व पद के अधिकारी भी बन गए थे । उक्त पत्रिका मेरे हाथ में आयी और जब-जब मैंने इस लेख को पढ़ा, मेरी आँखे आँसुओं से डबडबा गयीं । यदि मैं उस अमरगाथा को यहां पर दोहराने बैठ गया तो यह लेख तो उसी से भर जायेगा, जिसे इच्छुक पाठकगण उस पत्रिका से पढ़ सकते हैं । यहाँ पर तो हमें यह दिखाना है कि जो लोग हवन करते हैं और अमृत के आचमन करते हैं, वे इस अमृत को चख पाते हैं-छक पाते हैं, या यूं ही पीकर छोड़ देते हैं ।

"ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा । ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा । ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रियतां स्वाहा ।।" यह ध्वनि कहाँ गुंजायमान होती है? आर्यसमाज मन्दिर में या वहां जहां कोई आर्य का आवास है- चाहे वह प्रासाद हैं, घर है या कुटिया है । धन्य हैं महर्षि दयानन्द, धन्य है उसकी पञ्चमहायज्ञ प्रणाली और धन्य है उनकी संस्कार विधि, जिसने इस अमृत वर्षा की रसधार-फुहार को सर्वत्र सहज सुलभ कर दिया है । नीचे अमृत का आधार ऊपर अमृत का आवरण बीच में आचमनकर्ता के साथ है-सत्य, यश, श्री एवं शोभा का साम्राज्य । हथेली में भरकर जल का पान तो बहुत लोग कर लेते हैं, पर क्या वे सभी इस आचमन के अमृत रस का आभास कर पाते हैं? अधिकांश तो "सर्वं वै पूर्ण स्वाहा" बोलकर उठ जाते हैं और अमृत रस को यज्ञ वेदी पर ही छोड़कर चले आते हैं, तथा प्रतिदिन के अपने काम-धन्धे में लग जाते हैं । वेद माता हमें पग पग पर इस अमृत रस पान के लिए प्रोत्साहित करती है । आइये सुनें:-

अमृतं जातवेदसं तिरस्तमांसि दर्शतम् । घृताहवनमीड्यम्।।

ऋ. ८.७४.५ ॥

अर्थात् हे ज्ञानी जनो **(अमृतम्)** अविनश्वर व मुक्तिदाता **(जातवेदसम्)** जिससे सर्व विद्या, धन आदि उपजें हैं और हो रहे हैं जो **(तमांसि तिरः)** अज्ञान रूपी तम को दूर करने वाला है । **(दर्शतम्)** दर्शनीय **(घृताहवनम्)** घृतादि पदार्थदाता और **(ईड्य)** वन्दनीय है-उसकी कीर्ति गाओ । कीर्तिगाओं और उसे जीवन में अपनाओं । जो आचमन के जल का पान और इस अमृत का अनुपान कर लेता है, वह यज्ञवेदी से रीता नहीं, जीता-जागता और चमकता हुआ उठता है । इनमें से कुछ तो ऐसे महापुरूष बन जाते हैं जो अपने व्यक्तित्व, कृतित्व एवं वक्तृत्व के द्वारा इतने ऊँचे उठ जाते हैं, जो सूर्य-चन्द्र की भांति इतिहास के आकाश में छा जाते हैं । कोई उन्हें बिना देखे रह नहीं सकता, पर कुछ ऐसे तारगण होते हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र में ध्रुव, मंगल, बुध, बृहस्पति की भाँति यथोचित ज्ञान प्रभावान् तो होते हैं, किन्तु उन्हें गहन ध्यान से ही देखना पड़ता है ।

इनसे मिलिये-यह हैं श्रीचन्द्रपाल गुप्त, जो इन्हीं में से एक हैं जिनके जीवन में यज्ञ-अमृत रस की वर्षा हुई है । गुप्ता जी चौरासी वर्ष की आयु में भी युवा प्रतीत होते हैं । अलीगढ़ नगर में पंजाब नेशनल बैंक की प्रथम शाखा का उद्घाटन 22 जुलाई 1943 को हुआ । हाईस्कूल की परीक्षा दे चुके गुप्त जी उद्घाटन समारोह के अवलोकनार्थ बैंक स्थल पर पहुंच गये । एक लिपिक को अत्यधिक व्यस्त देखकर लेखन कार्य में उसकी सहायता करने लगे । बिना भोजन किये दिनभर कार्य में लगे रहे । हां बीच-बीच में उद्घाटन के लड्डू अवश्य मिलते रहे । अत्यन्त परिश्रमी जानकर उच्चाधिकारियों ने इनकी बैंक सेवा में नियुक्ति कर दी। चार वर्ष बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी । स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने के लिए चार दिन का अवकाश राष्ट्रीय स्तर पर घोषित हुआ । बैंक प्रबन्धक ने पिछले अवशेष कार्य को पूर्ण करने के लिए सभी कर्मचारियों को मुख्यालय छोड़ने की अनुमति नहीं दी । राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत गुप्त जी अवकाश में न केवल समारोह में भाग लेने दिल्ली चले गये, प्रत्युत् उन्होंने राष्ट्रीय पर्व की उपेक्षा का परिवाद भी शासन स्तर पर कर दिया । फलस्वरूप गुप्त जी को निलम्बित कर दिया गया । पुनःस्थापना के लिये चलते-चलते इनका अभियोग सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँच गया, और दस वर्ष बीत गये । बैंक अध्यक्ष एवं चन्द्रपाल गुप्त को परस्पर समझौता करने के लिये

तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश महोदय ने प्रेरित किया ।

अब बात अमृत रस के परीक्षण की आ गयी । मुख्य न्यायाधीश ने गुप्त जी से कहा कि इस दस वर्ष के अन्तराल में आपको जितने धन की हानि हुई हो, वह बता दीजिये । उसकी क्षतिपूर्ति करते हुए आपको सेवा में ले लिया जाये । गुप्त जी ने कह दिया- मुझे कोई हानि नहीं हुई है, क्योंकि मैंने अपने परिश्रम से बस-परिवहन का व्यवसाय कर लिया था, मुझे तो सेवा में रख लिया जाये- यही पर्याप्त है । बैंक के अध्यक्ष ने वक्तव्य दिया - मुख्य न्यायाधीश महोदय! आप इन्हें क्षतिपूर्ति चाहे जो दिलवा दें । मुझे इन्हें सेवा में नहीं रखना है । मुख्य न्यायाधीश श्री गुप्त की ईमानदारी व सत्यवादिता से प्रभावित थे । वे बोले-बैंक अध्यक्ष महोदय! आप को गुप्त जी को रखना ही है । यदि आप स्वेच्छा से रखते हैं तो ठीक है अन्यथा इनके वेतन के अनुसार क्षति पूर्ति करते हुए गुप्त जी को पुनः स्थापना का आदेश मेरे द्वारा पारित कर दिया जाएगा । इसके विचार के लिए बैंक अध्यक्ष को कुछ मिनिट दिए गए । वे मिनिट बीत जाते, इसके पूर्व ही बैंक अध्यक्ष ने कह दिया-हां ठीक है, और गुप्त जी फिर से सेवा में आ गये । दीर्घकालिक पूर्ण सेवा के बाद इन्होंने अवकाश ग्रहण किया। इनकी अर्द्धांगिनी के पितामह ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे जो दैनिक याज्ञिक आजीवन रहीं । इस अमृत रसपान का ही परिणाम है कि गुप्त जी आर्यसमाज में प्रेरणा-स्त्रोत व आदरणीय माने जाते हैं ।

इस आचमन अमृतरसपायी स्व. होती लाल नागर की कहानी कोई नहीं जान पायेगा, क्योंकि उन्हें तो रेलवे का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी समझ कर साधारण रूप में ही छोड़ दिया जायेगा । आर्यसमाज का सत्संग, सत्यार्थप्रकाश का पाठ और उसकी कथा करना-यह उनका दैनिक कर्तव्य था । प्रातः काल उस बड़े उद्यान में सत्यार्थप्रकाश लेकर पहुँच जाते थे, जहाँ नगर के संभ्रान्त नागरिक बड़ी संख्या में भ्रमण को आते थे । वहाँ अनेक लोग, इनके पाठ-संवाद का लाभ उठाते थे, शंका समाधान करते थे । नागरजी यज्ञ के अपार प्रेमी थे । होली, दीवाली व अन्य पर्वों पर बड़े पारिवारिक यज्ञ में जनसमूह को भी बुला लेते थे । लगभग पचासी वर्ष की आयु तक सक्रिय बने रहे । इनकी मृत्यु का दृश्य भी दुर्लभ और अद्भुत है । इस दिन इन्होंने ओ३म्-स्मरण व उच्चारण की झड़ी लगा दी । अपने बड़े पुत्र को पास बैठाया, और उसकी गोद में सर रखकर लेट गये । उनसे कहा कि मेरे साथ ओ३म् बोलो । एक बार, दो बार और तीसरी बार ओ३म् ध्वनि के साथ प्राण त्याग कर अपनी आत्मा को अमृतमयी, परमात्मा की गोद में समर्पित कर दिया । किसे मिलेगा अपने प्राणप्यारे से मिलने का इतना सुन्दर शुभावसर, उसी को जिसने अमृत रस का पान किया होगा ।

यत्किञ्चत् विस्तारभय के बाद भी यह लेखनी वय-विद्यावृद्ध पचासी वर्षीय वैद्य विजय गुप्त कौशिक के अमृत रसपान की चर्चा का लोभ संवरण नहीं कर पा रही है । आर्यजगत् को उनकी प्रेरणाओं से लेखक ही परिचित नहीं करायेगा तो कौन करायेगा । आज वे कविराज हैं, वैद्यराज हैं, हिन्दी प्रवक्ता पद से सेवानिवृत्त हैं । निज पुत्र-पुत्रियों को सुयोग्य-शिक्षित सम्पन्न आत्मनिर्भर करते हुये समाज में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाया है । उनका कथन है- मनुष्य जन्म लेता है, मर जाता है- कोई सत्कार्य की प्रेरणा नहीं छोड़ जाता है, तो पशु और उसमें अन्तर ही क्या है?'' सहसवान (बदायूँ) में जन्मे तब के ज्ञानचन्द के पिता की छाया बचपन में ही उठ गयी थी । बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर अपनी पढ़ाई की । अग्रज सिद्धहस्त वैद्य इनसे खरल में जड़ी-बूटी कुटवाने तक ही सीमित रखना चाहते थे । एक दिन इन्होंने अग्रज से शिक्षा में सहायता की बात क्या कह दी, उन्होंने इनसे सर्व सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा कर दी । आर्य समाज के यज्ञ-अमृत रस का पानकर धवल विमल सुन्दर छवि का यह ब्रह्मचारी ''ओम मेरे सोम मेरे, प्राण जीवन व्योम मेरे'' गाते हुए सहसवान के चौराहे पर प्रभु-पथ-प्रतीक्षा में आकर खड़ा हो गया । पीछे से इनके कन्धे पर एक हाथ का स्पर्श हुआ- महाशय ज्ञान चन्दर! मेरे बच्चों को पढ़ा दिया करो- यह लो अग्रिम राशि पठन-पाठन प्रबन्ध के लिये । ज्ञानचन्द ने पीछे मुड़कर देखा, तो उन डाक्टर महोदय को नमस्ते करके अभिवादन किया, कन्धे पर जिनका हस्तस्पर्श हुआ था । सचमुच वह प्रभु हस्त का स्पर्श ही था, जो इनके जीवन का आधार स्तम्भ सिद्ध हुआ । पढ़ते-पढ़ाते उच्चशिक्षा प्राप्त की, सम्मानजनक सेवा पद प्राप्त किया, और सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह कि कन्या गुरुकुल कासनी की ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभा जी इनकी सहधर्मिणी बनीं । स्मृतिशतक, गीतगुञ्जन एवं उद्घोष नामक काव्य संकलन का हिन्दी साहित्य में एक स्थान विशेष रहेगा ही, पर महानगर एवं समीपस्थ क्षेत्रों में आयोजित धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सभा-समारोह वैद्य विजय गुप्त कौशिक की वक्तृता बिन अपूर्ण समझे जाते हैं । ये तीन ही नहीं और भी बहुत है, जिन्होंने इस यज्ञ-आचमन के अमृतरस को चखकर स्वजीवन को देदीप्यमान किया, पर इनसे कई गुना अधिक वे हैं जो आचमन तो करते रहते हैं, नित्य नित्य अनेक बार करते हैं, किन्तु वह उनके लिए अमृत रस सिद्ध नहीं हो पाता है, कहीं हम भी तो उन्हीं में नहीं हैं । आइये विचारें और आगे इस यज्ञ-अमृत रस के स्वागत के लिए तैयार हो जायें । इन अशरीरी यशस्वी अमृत आत्माओं को श्रद्धाञ्जलि ।

'वरेण्यम्' अवन्तिका रामघाट मार्ग,
अलीगढ -२०२००१ (उ.प्र.)

वेदों का महत्व

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तृतीय नियम में कहा है कि–वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है । महर्षि ने वेदों पर इतना अधिक बल इसलिए दिया कि वेद ही आर्य जाति के प्राण हैं । वेद ही इस मानव–जाति के प्रकाश–स्तम्भ हैं। वेदों ने ही विश्व को ज्ञान की ज्योति दी है । उसने ही विश्व में आदिकाल से धर्म, संस्कृति, सदाचार, सामाजिक न्याय और विश्व–कल्याण की शिक्षा दी है । संसार के सभी धर्म–और सभी संस्कृतियाँ वेदों की ऋणी हैं । विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ होने का श्रेय वेदों का है । वेदों की शिक्षाओं के आधार पर ही विभिन्न धर्मों का विकास हुआ है । अतएव वेदों के आधार पर तुलनात्मक धर्म, तुलनात्मक संस्कृति और तुलनात्मक भाषा विज्ञान आदि शाखाएँ निकली ।

वेदों के अनुशीलन के आधार पर कहा जा सकता है कि वेदों की प्रमुख विशेषताएँ ये हैं :-

१. विश्वशान्ति–विश्वबन्धुत्व–विश्वकल्याण का सन्देश,
२. व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के साथ विश्व का हित,
३. वेद ज्ञान और विज्ञान के आधार हैं,
४. वेदों में विविध विद्याओं और विज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं,
५. वेदों में विश्व की समस्याओं का समाधान उपलब्ध है,
६. वेदों में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक और नैतिक–अभ्युदय के लिए दिशा–निर्देश हैं,
७. वेदों में सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज और चरित्र–निर्माण आदि के लिए कर्त्तव्योद्बोधन है,
८. वेदों में सामाजिक–राष्ट्रीय उत्थान का मार्गदर्शन है,
९. वेदों में स्वराज्य और स्वतन्त्र राष्ट्र की पुष्ट कल्पना है,
१०. मानवमात्र को वेदों की शिक्षा प्राप्ति का अधिकार,
११. वेदों में मानवजीवन का लक्ष्य बताया गया है– भौतिक उन्नति करते हुए अध्यात्म द्वारा मोक्ष प्राप्ति,
१२. वेदों में सत्य, अहिंसा, पुरूषार्थ, संयम, तप और आत्मिक उन्नति जीवन की आधारशिला माना है,
१३. वेदों में धार्मिक सहिष्णुता, ऊँच–नीच की भावना का निराकरण और राष्ट्रीय उन्नति में सबके सहयोग की कामना की गई है,
१४. वेदों में पूर्ण निरोग रहते हुए शतायु होने की कामना है,
१५. वेदों में पुरूषार्थ–चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए मार्गनिर्देश हैं,
१६. वेदों में एकांगी दृष्टिकोण की दूषित बताते हुए समन्वयवाद की स्थापना की गई है । अतएव विद्या–अविद्या (ज्ञानमार्ग और कर्ममार्ग) और संभूति–असंभूति (भौतिकवाद और अध्यात्म मार्ग) के समन्वय को उचित बताया गया है ।

वेदार्थ–चिन्तन :– वेदों के प्रतिपाद्य विषय को लेकर पर्याप्त मतभेद हैं । कतिपय आचार्यों ने वेदों का प्रतिपाद्य विषय यज्ञ को मानते हुए वेदों के मन्त्रों का केवल यज्ञपरक अर्थ किया है और उनकी लोकोपयोगिता की उपेक्षा की है । कतिपय विद्वानों ने देवतावाचक अग्नि, इन्द्र, विष्णु, सोम, मित्र, वरूण, वृत्र आदि शब्दों को रूढ़ मानते हुए इनका व्यक्तिविशेष या वस्तुविशेष का ही वाचक माना है । इससे वेदों के वास्तविक स्वरूप पर कुठाराघात हुआ है । आचार्य यास्क ने सर्वप्रथम वेदों के वास्तविक अर्थ को समझने का मार्ग प्रशस्त किया । आचार्य यास्क ने निर्देश दिया कि वेदों के मन्त्र केवल यज्ञ–विषयक ही नहीं हैं, अपितु उनके विविध उपयोग हैं । इसी प्रकार दूसरा मन्तव्य स्थापित किया कि वेदों में विभिन्न देवों के नाम रूढ़ या व्यक्ति विशेष के वाचक न होकर यौगिक हैं । ये देव विभिन्न गुणों के बोधक हैं, अतः व्यक्ति–विशेष या वस्तुविशेष के बोधक नहीं हैं, अपितु इन गुणों से युक्त व्यक्ति आदि का ये बोध कराते हैं । इस प्रकार देव बोधक शब्द नानार्थक होते हैं और प्रसंग के अनुसार इनके विभिन्न अर्थ लिए जाएँगें ।

आचार्य यास्क के पश्चात् व्याकरण–महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतंजलि वे व्यक्ति हैं, जिन्होंने वेदों के वैज्ञानिक स्वरूप को पहचान और मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की ।

महर्षि दयानन्द ने वेदार्थ के विषय में इन दोनों आचार्यों के दृष्टिकोण को अपनाकर वेदों को केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, अपितु वैज्ञानिक दृष्टि से भी सर्वोत्तम स्थान पर प्रतिष्ठित किया है । महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद विश्व भर के लिए प्रकाश–स्तम्भ हैं । इनमें आचार–संहिता के अतिरिक्त मानव–जीवन के लिए उपयोगी सभी शिक्षाओं का सार संगृहीत है । इनमें विज्ञान से सम्बद्ध सभी पक्षों के मूल तत्व सूत्ररूप में इनमें विद्यमान हैं । वेद के मन्त्रों से इन गूढ़ रहस्यों को निकालना समुद्र से रत्नों को निकालने के तुल्य है ।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्, यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।
यस्तन्नः वेद किमृचा करिष्यति, य इत् तद् विदुस्त इमे समासते ।
-ऋग् १.१६४.३९

इस मन्त्र में देवों के निवास से अभिप्राय है – गूढ़ रहस्यों की सत्ता एवं कतिपय वैज्ञानिक तत्वों का समावेश । अतएव आचार्य यास्क ने स्पष्ट रूप से कहा है–वेदों के मन्त्रों के रहस्य का साक्षात्कार ऋषि

तपस्वी ही कर सकते हैं ।

न ह्येषु प्रत्यक्षम अस्ति, अनृषेरतपसो वा ।-निरुक्त १३.१२

इसका अभिप्राय है कि वेदों के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए कठोर साधन और सूक्ष्म दृष्टि चाहिए । इसी दृष्टि से महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उदाहरणस्वरूप कुछ मन्त्रों को प्रस्तुत किया है और उनकी वैज्ञानिक व्याख्या की है ।

वेदों में एक ओर धर्म के तत्वों की व्याख्या है और अध्यात्म का प्रतिपादन है । ईश्वर, जीव, प्रकृति के गुण-धर्मों की व्याख्या है । योग, साधना और मोक्ष-प्राप्ति के लिए मार्ग-दर्शन है । दूसरी ओर भौतिक उन्नति, राजनीति-शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, आयुर्वेद आदि से सम्बद्ध सैकड़ों मन्त्र हैं, जिनमें ज्ञान और विज्ञान से सम्बद्ध तथ्यों का वर्णन है ।

इसी दृष्टि से कुछ तथ्यों का उल्लेख सूत्ररूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है । मैंने **'वेदामृतम् ग्रन्थमाला'** के अन्तर्गत २० ग्रन्थों में उपर्युक्त कुछ विषयों से सम्बद्ध सामग्री का संकलन किया है । मनोविज्ञान, आयुर्वेद, राजनीतिशास्त्र और नारी-गौरव से सम्बद्ध मन्त्रों की व्याख्या इन ग्रन्थों में की है । इंगलिश जानने वालों के लिए १५० विषयों पर लगभग डेढ़ हजार मन्त्रों का संकलन और उनकी व्याख्या *'The Essence of the Vedas'* ग्रन्थ में की है । इसमें विज्ञान की सभी शाखाओं से सम्बद्ध कुछ महत्वपूर्ण मन्त्र संकलित किए गए हैं ।

ऋषियों ने अपनी आर्ष दृष्टि से पञ्चतत्वों के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का साक्षात्कार किया था, अतः उन्हें ऋषि कहा जाता है । 'ऋषिदर्शनात्' गूढ़ तत्वों के साक्षात्कार के कारण मनीषियों को ऋषि कहा जाता था । अतएव यास्क ने कहा है कि :-

साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः ।-निरुक्त १.२०

अर्थात् ऋषियों ने गुढ़ तत्वों का साक्षात्कार किया था । इसमें आध्यात्मिक और वैज्ञानिक सभी तत्व सम्मिलित हैं ।

ऋग्वेद का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सूक्त(ऋग् १०.१२५.१-८) 'वाग् आभृणी' सूक्त है इसमें ८ मन्त्रों में वाक्तत्व *(Speech)* की भाषाशास्त्रीय दृष्टि से अत्यन्त गूढ़ व्याख्या की गई है । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान के प्रो. सईस *(Sayce)* ने अपने ग्रन्थ 'साईस आफ लैंग्वेज' *(Science of Language, Vol. I, Page 1)* में इस सूक्त के विषय में कहा है – इन मन्त्रों में वैदिक ऋषि का वाक् तत्व के विषय में जो वक्तव्य है, वह बहुत ही गम्भीर विचारपूर्ण, भाषाविज्ञान की दृष्टि से सत्य तथा बहुत ही दूरदर्शिता पूर्ण है । इस सूक्त का एक मन्त्र है –

अहमेव स्वयमिदं वदामि, जुष्टं देवेभिरूत मानुषेभिः ।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि, तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ।।

ऋग् १०.१२५.५

अर्थात् सारे देवगण और मनुष्य वाक्तत्व की ही उपासना करते हैं । मेरी जिस पर कृपा-दृष्टि होती है, वह तेजस्वी तत्वज्ञानी, ऋषि और मनीषी हो जाता है । मैं वायु की तरह सारे संसार में व्याप्त हूँ । मैं ही सारे लोकों का निर्माण करता हूँ । मैं इस द्युलोक और पृथिवी से बाहर भी विद्यमान हूँ ।

अहमेव वात इव प्र वाम्यारभ माणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव ।।

-ऋग् १०.१२५.८

साधारणतया यह समझा जाता था कि भारतीयों को यह ज्ञात नहीं था कि पृथिवी घूमती है और सूर्य की परिक्रमा करती है । सूर्य अपने स्थान पर स्थित है । इस भ्रम का निवारण ऐतरेय ब्राह्मण और गोपथ ब्राह्मण से होता है । उनमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि न सूर्य उदय होता है और न अस्त होता है, केवल व्यवहार के लिए दिन के अन्त को सूर्यास्त और रात्रि के अन्त को सूर्योदय कहा जाता है । यह पृथिवी ही घूमती है ।

स वा एष (आदित्यः) न कदाचनास्तमयति, नोदयति । तद् यदेनं पश्चाद् अस्तमयतीति मन्यते, अह्न एव तदन्त । अथात्मानं विपर्यस्यतेऽहरेवा धस्तात् कृणुते रात्रीं । गोपथ ब्रा.उत्तर. ४.१० ।

ऐतरेय ब्राह्मण, चारों वेदों में निम्नलिखित मन्त्र आया है और स्पष्ट किया गया है कि पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है ।

आयं गौः पृश्निरक्रमीद् असदन्मातरं पुरः .....।

-ऋग् १०.१८९.१, यजु. ३.६, साम. ६३०

यजुर्वेद में एक मन्त्र आया है, जिसमें कहा गया है कि केवल यह पृथिवी ही परिक्रमा नहीं करती है, अपितु चक्कर लगाती है, अर्थात् सूर्य अपनी धुरी पर घूमता रहता है, इस प्रकार संसार गतिशील है ।

समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः .....।

यजुर्वेद में उल्लेख है कि सुषुम्ण नामक सूर्य की किरण ही चन्द्रमा को प्रकाश देती है । इसका अभिप्राय यह है कि चन्द्रमा में अपना प्रकाश नहीं है, अपितु वह सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशित होता है ।

सुषुम्णः सूर्यरश्मिः चन्द्रमा गन्धर्वः ।

इसी भाव को आचार्य यास्क ने कहा है कि सूर्य किरण चन्द्रमा को प्रकाश देती है ।

अथाप्यस्य एको रश्मिः चन्द्रमसं प्रति दीप्यते ।
आदित्यतोऽस्य दीप्तिर्भवति । निरुक्त

शेष भाग अगले अंक में .....

सचिव
दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
चलभाष-९९९९४२६४७४

.....***.....

जनवरी अंक से आगे

महात्मा गाँधी, इस्लाम और आर्यसमाज

डॉ. विवेक आर्य

जिन मुसलमानों ने हीरालाल के मुसलमान बनने और उसकी बाद की हरकतों में रूचि दिखाई है, उनको संबोधन करते हुए श्रीमती गाँधी लिखती हैं-

'आप लोगों के व्यवहार को मैं समझ नहीं सकी । मुझे तो सिर्फ उन लोगों से कहना है, जो इन दिनों मेरे पुत्र की वर्तमान गतिविधियों में तत्परता दिखा रहे हैं ।'

मैं जानती हूँ कि मुझे इससे प्रसन्नता भी है कि हमारे चिर-परिचित मुसलमान मित्रों और विचारशील मुसलमानों ने इस आकस्मिक घटना की निंदा की है । आज मुझे उच्चमना डॉ. अंसारी की उपस्थित का अभाव बहुत खल रहा है, वे यदि होते तो आप लोगों और मेरे पुत्र को सत्परामर्श देते, मगर उनके समान ही और प्रभावशाली तथा उदार मुस्लमान हैं, यद्यपि उनसे में सुपरिचित नहीं हूँ, जोकि मुझे आशा है, तुमको उचित सलाह देंगे । मेरे लड़के को सुधारने की अपेक्षा मैं देखती हूँ कि इस नाम मात्र के धर्म परिवर्तन से उसकी आदतें बद से बदतर हो गई हैं । आपको चाहिए की आप उसको उसकी बुरी आदतों के लिए डाँटे और उसको उल्टे रास्ते से अलग करें । परन्तु मुझें यह बताया गया है कि आप उसे उसी उलटे मार्ग पर चलने के लिए बढ़ावा देते हैं । कुछ लोगों ने मेरे लड़क को 'मौलवी' तक कहना शुरू कर दिया है । क्या यह उचित हैं? क्या आपका धर्म एक शराबी को मौलवी कहने का समर्थन करता हैं? मद्रास में उसके असद आचरण के बाद भी स्टेशन पर कुछ मुसलमान उसको बिदाई देने आये । मुझे नहीं मालूम उसको इस प्रकार का बढ़ावा देने में आप क्या खुशी महसूस करते हैं । यदि वास्तव में आप उसे अपना भाई मानते हैं, तो आप कभी भी ऐसा नहीं करेंगे, जैसा कि कर रहे हैं, वह उसके लिए फायदेमंद नहीं है । पर यदि आप केवल हमारी फजीहत करना चाहते हैं तो मुझे आप लोगों को कुछ भी नहीं कहना है । आप जितनी भी बुराई करना चाहें कर सकते हैं । लेकिन एक दुखिया और बूढ़ी माता की कमजोर आवाज शायद आप में से कुछ एक की अन्तरात्मा को जगा दे । मेरा यह फर्ज है कि मैं वह बात आप से भी कह दूँ जो मैं अपने पुत्र से कहती रहती हूँ । वह यह है कि परमात्मा की नजर में तुम कोई भला काम नहीं कर रहे हो ।

(कस्तूरबा के हीरालाल गाँधी के नाम लिखे गये पत्र को पढ़कर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं हैं । उन्होंने स्पष्ट रूप से इन हीरालाल के मुसलमान बनने की तीव्र आलोचना की है एवं समझदार मुसलमानों से हीरालाल को समझाने की सलाह दी है।)

हीरालाल गाँधी को इस्लाम से धोखा और आर्यसमाज द्वारा उनकी शुद्धि

अब्दुल्लाह बनने के लिए हीरालाल गाँधी को बड़े-बड़े सपने दिखाए गये थे । गाँधीजी ने तो लिखा ही था जो सबसे बड़ी बोली लगाएगा हीरालाल उसी का धर्म ग्रहण कर लेगा । हीरालाल के अब्दुल्लाह बनने के समाचार को बड़े जोर-शोर से मुस्लिम समाज द्वारा प्रचारित किया गया । ऐसा लगता था जैसे कोई बड़ा मोर्चा उनके हाथ आ गया हो । हीरालाल की आसानी से रूपया मिलने के कारण उसकी हालत बद से बदतर हो गई ।

उनको मुसलमान बनाने के पीछे यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि उनके जीवन में सुधार आये, उनकी गलत आदतों पर अंकुश लग सके परन्तु गाँधीजी को नीचा दिखाना था, हिन्दू समाज को नीचा दिखाना था उन्हें इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना था । अपने नये अवतार में हीरालाल ने अनेक स्थानों का दौरा किया एवं अपनी तकरीरों में इस्लाम और पाकिस्तान की वकालत की । उस समय हीरालाल कानपुर में थे । उन्होंने एक सभा में भाषण देते हुए कहा 'अब मैं हीरालाल नहीं बल्कि अब्दुल्ला हूँ । मैं शराब छोड़ सकता हूँ लेकिन इसी शर्त पर कि बापू और बा दोनों इस्लाम कबूल कर लें ।'

आर्यसमाज द्वारा कस्तूरबा गाँधी की अपील पर हीरालाल को समझाने के कुछ प्रयास आरम्भ में हुए पर नये-नये अब्दुल्लाह बने हीरालाल ने किसी की नहीं सुनी । पर कहते हैं कि झूठ के पाँव नहीं होते, जो विचार सत्य पर आधारित न हो, जिस विचार के पीछे अनुचित उद्देश्य शामिल हो वह विचार सुदृढ़ एवं प्रभावशाली नहीं होता । ऐसा ही कुछ हीरालाल के साथ हुआ । हीरालाल की रातें या तो नशे में व्यतीत होती अथवा नशा उतरने के बाद उनकी आँखों के सामने बूढ़ी माँ कस्तूरबा का पत्र उन्हें याद आने लगा जिससे उनका मन व्यथित रहने लगा ।

उस काल में हिन्दू-मुस्लिम दंगे सामान्य बात थी । एक बार कुछ मुसलमान उन्हें एक हिन्दू मन्दिर तोड़ने के लिए ले गये और उनसे पहली चोट करने को कहा । उन्हें उकसाते हुए कहा गया कि या तो सोमनाथ के मंदिर पर मुहम्मद गोरी ने पहली चोट की थी अथवा आज इस मंदिर पर अब्दुल्लाह गाँधी की पहली चोट होगी । कुछ समय तक चुप रहकर, सोच विचार कर अब्दुल्लाह ने कहा की जहाँ तक इस्लाम का मैंने अध्ययन किया है मैंने तो इस्लाम की शिक्षाओं में ऐसा कहीं नहीं पढ़ा की किसी धार्मिक स्थल को तोड़ना इस्लाम का पालन करना है और किसी भी मंदिर को तोड़ना देश की किसी ज्वलंत समस्या का समाधान भी नहीं है । हीरालाल के ऐसा कहने पर उनके मुस्लिम साथी उनसे होकर चले गये और उनसे किनारा करना आरंभ कर दिया ।

श्रीमान जकारिया साहब जिन्होंने हीरालाल को अब्दुल्लाह बनने के लिए अनेक वायदे किये थे उनकी तो बात करने की भाषा ही बदल गई थी । जो मुसलमान हीरालाल को बहकाकर अब्दुल्लाह बना लाये थे वे अपने मनसूबे पूरे न होते देख उन्हें ही लानते देने लगे ।

आखिर उन्हें गाँधीजी का वह कथन समझ में आ गया की हीरालाल को अब्दुल्लाह बनाने से इस्लाम का कुछ भी फायदा होने वाला नहीं है । अब्दुल्लाह का मन अब वापिस हीरालाल बनने को कर रहा था परन्तु अभी भी मन में कुछ संशय बचे थे । इतिहास की अनोखी करवट देखिये कि गाँधीजी ने आर्यसमाज के शुद्धि मिशन की जहाँ खुलेआम आलोचना की थी उन्हीं गाँधीजी के पुत्र हीरालाल को आर्यसमाज की शरण में वापिस हिन्दू धर्म में प्रवेश के लिए, अपनी शुद्धि के लिए आना पड़ा था । आर्यसमाज बम्बई के श्री विजयशंकर भट्ट द्वारा वेदों की इस्लाम पर श्रेष्ठता विषय पर दो व्याख्यान उनके मन में बचे हुए बाकी संशयों की भी निवृति हो गई । जिन हीरालाल को मुसलमानों ने तरह-तरह ले लोभ और वायदे किये थे उन्हीं हीरालाल को बिना किसी लोभ अथवा प्रलोभन के, बिना किसी झूठे वायदे के अब्दुल्लाह से हीरालाल वापिस बनाया गया ।

बम्बई में खुले मैदान में हजारों की भीड़ के सामने, अपनी माँ कस्तूरबा और अपने भाइयों के समक्ष आर्य समाज द्वारा अब्दुल्लाह को शुद्धकर वापिस गाँधी बनाया गया ।

अपने भाषण में हीरालाल ने उस दिन को अपने जीवन का सबसे स्वर्णिम दिन बताया । उन्होंने कहा की धर्म का सत्य अर्थ केवल उसकी मान्यताएँ भर नहीं अपितु उसके मानने वालों की संस्कृति, शिष्टता और सामाजिक व्यवहार पर उसका प्रभाव भी है । इस्लाम के विषय में अपने अनुभवों से मैंने यह सीखा है कि हिन्दुओं की वैदिक संस्कृति एवं उसको मानने वालों की शिष्टता और सामाजिक व्यवहार इस्लाम अथवा किसी भी अन्य धर्म से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है । इतना ही नहीं इस्लाम में पाई जाने वाली सत्यता हिन्दू संस्कृति की ही देन हैं । जिन मुसलमानों के मैं संसर्ग में आया वे इस्लाम की मान्यताओं से ठीक विपरीत व्यवहार करते हैं । इसलिए अब में इस्लाम को इससे अधिक नहीं मान सकता और मैं अब वहीं आ गया हूँ जहाँ से मैंने शुरूआत की थी । अगर मेरे इस निश्चय से मेरे माता-पिता, मेरे भाइयों, मेरे सम्बन्धियों को प्रसन्नता हुई है तो मैं उनका आशीर्वाद चाहूँगा । अंत में मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ और उन्हें मेरा सहयोग करने की विनती करता हूँ । हीरालाल वैदिक धर्म का अभिन्न अंग बनकर भारतीय श्रद्धानन्द शुद्धि सभा के सदस्य बन गये और आर्यसमाज के शुद्धि कार्य मे लग गये । दिसम्बर १९३६ के सार्वदेशिक अखबार के सम्पादकीय में महात्मा नारायण स्वामी लिखते हैं-

अब्दुल्लाह से हीरालाल

महात्मा गाँधी के ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल गाँधी अब अब्दुल्लाह नहीं हैं । आर्यसमाज मुंबई में वे शुद्ध करके प्राचीनतम आर्यधर्म में वापिस ले लिए गये हैं । हिन्दू धर्म का परित्याग करने में उन्होंने जो भूल की थीं, उसे अनुभव करके और प्रकाश रूप में उसे स्वीकार करके उन्होंने अच्छा ही किया है । उनका उदाहरण भावावेश में परिवर्तन करने वालो के लिए एक अच्छा उदाहरण है । हीरालाल को हिन्दू धर्म के प्रति जो उन्होंने अपराध किया हैं उसका प्रायश्चित करना बाकी रह जाता है । उन्हें चाहिए कि वे वैदिक धर्म के सुसंस्कृत रूप का अध्ययन करें और अपने जीवन को उसके सांचे में ढालें । यही उस अपराध का उत्तम प्रायश्चि है । जो मुस्लमान हीरालाल को इस्लाम के दायरे में बहुमूल्य वृद्धि समझे बैठे थे और जो उनमें सुधार की चेष्टा के बजाय उन्हें इस्लाम के प्रोपोगंडा का साधन बनाए हुए थे वे गलती पर थे और इस्लाम की असेवा कर रहे थे, वह बात यह घटना स्पष्ट करती हैं और धर्म परिवर्तन करने वाली अन्य संस्थाओं को भी अच्छा शिक्षा प्रदान करती है ।

महात्मा गाँधी अपने पुत्र को वापिस पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए थे और सार्वजानिक रूप से चाहे उन्होंने स्वामी दयानन्द को शुद्धि की प्राचीन व्यवस्था को फिर से पुनजीवित करने का श्रेय भले ही न दिया परन्तु उनकी मनोवृति से यह भली प्रकार से स्पष्ट हो जाता हैं कि आर्यसमाज के आलोचक होते हुए भी उन्हें सहारा तो स्वामी दयानन्द के सिद्धांतों का ही लेना पड़ा था ।

'आर्य सन्देश' से साभार

वैज्ञानिक युग में - अवैज्ञानिक मान्यताएँ

अर्जुन देव स्नातक

आज विज्ञान का युग है । सृष्टि के अज्ञात रहस्यों का नियमित व्यवस्थित बुद्धिगम्य अन्वेषण का नाम विज्ञान है । इस वैज्ञानिक युग में प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा अन्वेषित तथ्यों की कतिपय वैज्ञानिक साधनों द्वारा परीक्षा की, उन तथ्यों को सत्य एवं विज्ञान सम्मत प्राप्त किया । निश्चय से सत्य की कसौटी पर परीक्षित ऋषि-मुनियों द्वारा वर्णित सृष्टि के नियम वैज्ञानिक नियम कहलाते हैं । ऋषि मुनियों द्वारा अन्वेषित तथ्यों का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद रहा है । आधुनिक युग के युग निर्माता स्वामी दयानन्द ने समस्त विश्व को विज्ञान सम्मत वेद मार्ग पर चलने का आह्वान करते हुए आर्य समाज की स्थापना की । उन्होंने आर्य समाज की प्रगति के लिए विश्व के समस्त मानवों के कल्याण के लिये प्रमुखतया दस नियम निर्धारित किये । उनमें सबसे पहला नियम है- 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है'। आश्चर्य यह है कि संसार में सत्य एवं ऋत नियमों- (अपरिवर्तनीय नियमों) के रहते हुए भी हम बुद्धि हीन अज्ञान से परिपूर्ण अन्धविश्वासों वाले अवैज्ञानिक मान्यताओं को पूर्ण विश्वास के साथ अपनाये हुए हैं । आचार्य रजनीश ने एक पुस्तक में लिखा है- "अतीत का अन्ध-विश्वास से भरा ज्ञान विकासशील मस्तिष्क के लिए जंजीर बन जाता है ।" रजनीश के इस विचार का प्रत्यक्ष वर्तमान में अनेक पढ़े लिखे विज्ञान वेत्ताओं में प्राप्त होता है । जिसने भूगोल विषय में एम. ए.पी.-एच.डी. की है वह विद्यालय में छात्रों को विज्ञान के आधार पर पढ़ाता है कि जो स्वयं प्रकाशित होते हैं उनकी संज्ञा नक्षत्र है । इस आधार पर सूर्य नक्षत्र है । चन्द्रमा पृथिवी का चक्कर काटने से उपग्रह है । यह ज्ञान विद्यार्थियों को देता है । घर पर आकर वही अध्यापक कक्षा आठ, दस पास पंडित के यह कहने से आप पर सूर्य ग्रह का प्रकोप है, चन्द्र ग्रह भी आपके लिए अशुभ करने वाला है-उस समय सूर्य नक्षत्र है तथा चन्द्र उपग्रह है, इस बात को भूल जाता है तथा सामान्य पढ़े लिखे के कथनानुसार ग्रहों की शान्ति के लिए अनुष्ठान कराता है । यह कृत्य सर्वथा अवैज्ञानिक है । अन्य अनेक अवैज्ञानिक मान्यताएँ इस समाज में अर्थात् समस्त विश्व में व्याप्त हैं । आइये, संक्षेप में उन पर विचार करते हैं :- **गंगा स्नान, तीर्थ-भ्रमण, अस्थि प्रगाह-** अनेक लोगों की मान्यता है गंगा स्नान से कृत पाप नष्ट होते हैं, यही विचार तीर्थों में भ्रमण करने से माना जाता है । मृत्यु के बाद नदी विशेष में अस्थि-प्रवाह करने से मृत आत्मा को मोक्ष प्राप्त होता है । तीर्थ-यात्रा करने से पुण्य होता है, सारे पाप नष्ट होते हैं । क्या उक्त बाते विज्ञान सम्मत हैं?

प्रथम गंगा-स्नान तथा अस्थि-प्रवाह पर विचार करते हैं । जल शरीरादि को स्वच्छ करता है, मन की मलिनता को नहीं । फिर हम यह भी देखते हैं किये हुए कर्म कभी समाप्त नहीं होते हैं, उनका फल अवश्य मिलता है । थोड़ा विचार करें । गलती से बबूल के बीज बोये-अब उस पर कितना ही गंगा जल डालें, प्रार्थना करें, विशेष अनुष्ठान करें क्या बबूल के स्थान पर आम लगेगें, आम का वृक्ष उगेगा? यह कभी संभव नहीं है फिर नदी विशेष में स्नान करने से पाप नष्ट होते हैं, यह मान्यता तथा तीर्थादि भ्रमण से पाप नष्ट होते हैं, यह मान्यता अवैज्ञानिक है । कबीर ने लिखा है-तीरथ चाले दोउ जना चितचंचल मन चोर । एकौ पाप न उतारिया दस मन लाये और ।। कैसे आश्चर्य की बात सबको पवित्र करने वाली गंगा को पवित्र करने की चिन्ता तथा कथित साधुओं को हो रही है । उन साधुओं को गंगा जल पीकर पवित्र होने का उपदेश औरों को देते हैं तथा स्वयं क्या करते हैं- स्वयं कुम्भादि मेले पर बिसलरी का पानी पीते हैं । थोड़ा विचार करें । मोक्ष किसे कब मिलता है- उपदेश में सभी यह कहते हैं सत्कर्म-निष्काम कर्म मोक्ष देते हैं फिर अस्थि जिसमें आत्मा नहीं है गंगादि में डालने से मोक्ष कैसे प्राप्त करेंगी। सत्य तो यह है कि उक्त मान्यता अवैज्ञानिक है ।

फलित ज्योतिष-ग्रह शान्ति-शुभ-अशुभ मुहूर्त - ज्योतिष में गणित ज्योतिष तो सृष्टि के ऋत नियमों के आधार पर होने से सत्य है । ग्रहण कब कहाँ होगा, सूर्योदय-सूर्यास्त किस दिन कब होगा आदि ज्ञान विज्ञान सम्मत होने से सत्य है । फलित ज्योतिष अमुक राशि वाला सुखी या दुखी होगा पूर्णतया असत्य है । सुख-दुख कर्मानुसार तथा मन की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता पर आधारित है । ज्योतिषियों को हाथ दिखाकर भविष्य फल जानना, अमुक शुभ या अशुभ मुहूर्त है आदि बातें सारी अवैज्ञानिक है । राशि के ञ,ण,ढ,उ,ङ, अक्षर होते हैं इन पर कौन सार्थक नाम रखता है । जन्म पत्री कक्षा आठ-दस पास पंडित बनाता है- बहुत पढ़ा लिखा पंडित बनाता है, सब असत्य होता है- केवल रूपये कमाने के धंधे है । हाथ देखकर भविष्य बताने वाले ज्योतिषी पर किसी ने सत्य लिखा है - नजूमी राह में बैठा किस्मत बताता है दर हकीकत वह किस्मत अपनी ही बनाता है । जाहिर देखता है हाथ वा दुनिया वालों के जब गौर से देखा तो वह हाथ अपने ही दिखाता है ।। ग्रह जड़ हैं, इनकी शान्ति के लिए की गई प्रार्थनाएँ ये सुन सकेंगे । करोड़ों मील दूर स्थित ये ग्रह हैं, भूमि पर बैठे हुए पंडित

को इनकी क्रूरता, इनकी शान्ति दिखाई देती है? कैसी कल्पना है, कैसा यह अन्धविश्वास है । शुभ मुहूर्त, अशुभ मुहूर्त की जानकारी इन पंडितों को होती है । तभी अधिकांश पढ़े लिखे नेता-अभिनेता शुभ मुहूर्त की जानकारी प्राप्त करके अपना कार्य करते हैं । स्वतत्रंता प्राप्त होने बाद छ सौ देशी रियासतों के पंडित लोग अपने अपने राजाओं को न बता सके कि रियासतें समाप्त होने वाली हैं फिर भी हम अन्धविश्वास में फंसे हुए हैं ।

देव सो गये हैं, कोई शुभ कार्य इन दिनों न करें ये मान्यता भी अवैज्ञानिक है । सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता, वायु देवता, अग्नि देवता, नक्षत्र देवता आदि अन्य अनेक देवता अपने नियम को न छोड़कर कार्य में रत है, फिर कौन सा देवता सो गया है । इनमें से कोई भी देवता अपने नियत कार्य को छोड़ेगा तो संसार के कार्य कैसे चलेंगे? इस पर विचार करें, अन्ध विश्वास में न फंसे ।

हमारे बालक के विवाह की तारीख निश्चय होने के बाद दूसरे दिन कन्या पक्ष का फोन आया-देव सो गये हैं- अतः देवों के जागने पर तीन महिने बाद विवाह हो सकेगा । हमने सुना तो हम तुरन्त कन्या पक्ष के घर गये । पहले उनकी उक्त बात सुनी फिर हमने कहा कौन से देव सो गये ? सूर्य-चन्द्र-वायु-आकाश-अग्नि आदि देवों में कौन सा देव सो गया है । अगर सो गया है तो अग्नि में हाथ डालें तो नहीं जलना चाहिए। सूर्य की किरणें गरम है या ठण्डी? ये नियम से उदय अस्त हो रहे हैं आदि बातें सुनकर विवाह निश्चित तिथि में करने को सहमत हो गये ।

विवाह में पंडित गुण मिलाते है-वर-कन्या के सुख का योग बताते हैं- नवजात शिशु का जन्म पत्र बनाकर आयु 70-80 बताते हैं आदि जब वर कन्या में बनती नहीं या कोई संकट भयंकर आता है तथा जन्म-पत्र वाले बालक पाँच छः में ही मृत्यु होती है तब पंडित जी से पूछे तो यही उत्तर देंगे - 'दैव इच्छाबलीयसी' भाग्य बलवान् हैं, ईश्वर के नियम के आगे हमारी कहां चलती है । जब कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्था है तो इस अवैज्ञानिक मान्यता में हम पढ़े लिखे क्या फंसे है ?

जड़ को चेतन समझकर व्यवहार करना अवैज्ञानिक - आज संसार में मूर्ति पूजा प्रचलित है क्या यह वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक है? थोड़ा इस पर विचार करें । एक उत्तम कुशल चित्रकार के पास जाकर हमने कहा हमारे बाबा का चित्र बना दें । चित्रकार बोले बिना चित्र के हम उनका चित्र नहीं बना सकते । एक अच्छा चित्रकार भी बिना देखे हुए क्या चित्र बनाने में असमर्थ है तो वेद वर्णित-'न तस्य प्रतिमा अस्ति' तथा 'सपर्यगाच्छुक मकायमव्रण मस्ना विरं' जिसको किसी ने उसकी मूर्ति न होने से देखा नही तथा सर्वव्यापक वह ईश्वर शरीर रहित नस नाड़ियों के बन्धन से रहित है तो उसकी मूर्ति कैसे बन सकती है? इस आधार पर मूर्तिपूजा निरर्थक है ।

मूर्तिपूजा अवैज्ञानिक इसलिए भी है कि वेदों के अतिरिक्त दर्शन शास्त्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, रामायण महाभारत किसी प्राचीन ग्रन्थ में जड़ मूर्ति पूजा का विधि-विधान नहीं मिलता है । शंकराचार्य, कबीर, नानक, तुकाराम आदि सन्तों ने इसे उचित नहीं माना हैं । सत्य तो यह है कि वह निराकार है हमने उसकी आकृति बना दी । इससे सारी व्यवस्था उलट गई-जो हमें खिलाता है-उसे हम भोग लगाने लगे, जाड़ों में रजाई उढ़ाने लगे, मेवों का प्रसाद चढ़ाने लगे, गर्मियों में एसी, कूलर की व्यवस्था करने लगें- जो ईश्वर इनको हमें प्रदान करता है-हम उसे देते हैं-मान करते हैं या अपमान ? कोई निर्धन धनवान को एक पैसा दान देते मान या अपमान ? इसके अतिरिक्त पंडितों की कथा में ये सुनकर कि शिव के गण आयेंगे शत्रुओं का विनाश करेंगे इस अवैज्ञानिक अन्धविश्वास से सोमनाथ आदि मन्दिरों का विध्वंस हुआ । सुवर्णादि धन वैभव के साथ तथा कथित पंडितों की जो हानि या दुर्दशा हुई, वह सब जानते हैं, फिर भी हम मूर्ति पूजा के अन्ध विश्वास में फंसे हुए हैं । हम भारतवासी वीर होते हुए भी इस अवैज्ञानिक जड़ मूर्ति पूजा के कारण पराधीन हुए । स्वामी दयानन्द ने सत्य ही लिखा है कि जड़ की पूजा करने से अन्तः करण में जड़त्व का भाव आ जाता है । बुद्धि जड़ हो जाती है सोच विचार कर कार्य करने की शक्ति समाप्त हो जाती है ।

योग दर्शन के व्यास भाष्य में पूजा का अर्थ लिखा है पूजनंनाम सत्कारः अर्थात् यथोचित व्यवहार को पूजा कहते हैं । जड़ को जड़ समझकर उससे वैसा व्यवहार करना चाहिए । जो जड़ आपके द्वारा किये गये व्यवहार को न जानता है, न समझता है न आशीर्वादादि देता है उसकी पूजा वैज्ञानिक नहीं अवैज्ञानिक है । इस अवैज्ञानिकता के कारण चेतन माता-पिता आचार्य आदि वृद्ध जन उपेक्षित हो गये हैं । जिनको खिलाने से, जिनका यथोचित सत्कार करने से हमें आशीर्वाद मिलता है- वे आज मूर्तिपूजा के कारण उपेक्षित हो गये हैं । जो खा सकते हैं, जिन्हें भोजनादि से तृप्ति हो सकती है, उनकी ओर हमारा ध्यान नहीं । आज जो देश भर में वृद्धाश्रम बन रहे हैं क्या यह हमारे लिए गौरव की बात है । किसी कवि का वचन है -

यं माता पितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम् ।
न तस्य निष्कृति कर्तु शक्या वर्ष शतैरपि ।।

सामर्थ्य शाली मनुष्य के रहने प ..। जिसके माता-पिता कष्ट में रहते हैं, उसका कोई प्रायश्चित नहीं है, उसका कल्याण कभी भी संभव नहीं है । इस अन्धविश्वास अन्य अवैज्ञानिक जड़ पूजा ने-

शेष भाग पृष्ठ 22 पर .....

हे भारत माता के सपूतों

राजेंद्र आर्य

हे भारत माता के सपूतो, अपनी गरिमा पहचानो ।
साठ वर्ष हुए आजादी को, अब स्वाभिमान से जीना सीखो ।।

हर ध्वनि को जो लिख सकती है, उस हिन्दी पर सदा ही गर्व करो ।
अभयदान हर जीव को दे, उस संस्कृति पर अभिमान करो ।।

दुनियां में केवल भारत है, ईश्वर ने स्वयं जहां ज्ञान दिया ।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम, अथर्ववेद, ज्ञान विज्ञान इनमें है भरा ।।

दुनियां में केवल गौमाता के, पीठ पर सूर्य चक्र मिला ।
सूर्य की किरणों से स्वर्ण खींचकर, खून से दूध में जा मिलता ।।

गौमाता के दूध दही का, जिस धर्म सेवन है होता ।
मंद बुद्धि ना पागल कोई, उस घर में पैदा होता ।।

यहि है भारत को धरती, जहां लाखों संतो ने जन्म लिया ।
मानवता कहते हैं किसको, इसकी व्याख्या दुनिया को दिया ।।

हजारों ग्रंथ हैं यहां पर जिनमें, धर्म का तत्व बताया गया ।
और चमत्कार देखो कैसा है, पद्य में सभी को लिखा गया ।।

यहां की चिकित्सा पद्धति ने, विज्ञान विश्व को ऐसा दिया ।
जो अपना ले जीवन में, निरोग सदा बना रहता ।।

यहां पर हमारे पूर्वजों ने, देखो कैसा निर्माण किया ।
नौ लाख वर्ष हुए राम सेतु को, अभी है जैसे ही नया नया ।।

यही देश जहां स्त्रियों को, सदा से पूजा है जाता ।
नवरात्र में कन्या पुजती हैं, देवियों के कई मंदिर हैं यहां ।।

पराई स्त्री मां बहन समान है, ऐसी सीख मिलती है जहां ।
उस देश का नाम भारत है, जिस धरती पर तुमने है जन्म लिया ।।

बंदर से आदमी पैदा हुआ, जो कहते हैं उनसे सवाल करो ।
बंदर तो मांस को खाता नहीं, फिर तुम क्यों मांस को खाते हो ?

बंदर की औलाद नही तुम, ऋषि मुनियों के वंशज हो ।
भारत माता के सपूत हो, इस पर सदा ही गर्व करो ।।

बल्हारपुर मो. ९८२२७२३१६२

अपकर्ष

ओमप्रकाश बजाज

सत्संग से सेक्स
कैसा अपकर्ष !
किन्तु गुरुत्वाकर्षण का नियम तो
सब पर समान रूप से
प्रभावकारी है ।
मानव मन नितांत चंचल है
कहां कहां भटक भटक जाता है
पल में यहां पल में वहां
बुरे से भले और भले से बुरे में
बदल बदल जाता है ।
युगों पूर्व के ऋषि मुनि तपस्वी
मन पर नियंत्रण नहीं रख पाए
यौनाकर्षण के आगे
नतमस्तक हो गए बेचारे ।
वर्तमान युग के बेचारे बाबा लोग
भला किस गिनती में आते हैं
कोई अचरज की बात नहीं
कि सामने पसरे सुलभ 'माल' पर
लार ही नहीं टपकाते
फिसल फिसल भी जाते हैं ।
न जाने अपने अनुयायियों को
अपने प्रवचनों में ज्ञान बांटने वाले
ये महानुभाव अंतरंग क्षणों में
यह बुनियादी नियम क्यों
बिसरा बैठते हैं कि
पाप का घड़ा अंततः फूटता है
और लपेटे में आए बड़े बड़ों को
ले डूबता है !

बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर - ४८२००१ म.प्र.
फोन : ०७६१-२४२६८२० मो. : ९८२६४९६९७५

दही की स्वास्थ्य वर्धक शक्ति

'आयुर्वेद शिरोमणि' डॉ. मनोहर दास अग्रावत एम.डी.
विद्या वाचस्पति (प्राकृतिक चिकित्सक)

शरीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग से विजातीय तत्वों को बाहर निकाल कर नव जीवन प्रदान करने वाली तथा रोग प्रतिरोधक शक्ति शरीर में एकत्र कर सुदृढ़ स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का उपहार देने वाली वस्तु को 'अमृत' के अतिरिक्त भी कोई संज्ञा दी जा सकती है? इस विषय में दो मत होने की सम्भावना नहीं । इस रहस्यमय एवम् अमृत तुल्य वस्तु का नाम 'दही' है इससे सभी परिचित हैं ।

भोजन को सुपाच्य स्वादिष्ट और स्वास्थ्य वर्धक बनाने में दही की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । भारतीय संस्कृति में चिरकाल से दही की महत्ता को अंगीकार किया है । यज्ञ, हवन, विवाह संस्कार तथा मंदिरों में प्रसाद आदि के मांगलिक अवसरों पर दही का प्रयोग सदैव होता रहा है । शास्त्रकारों ने राम और कृष्ण के बाल्य जीवन में भोज्य पदार्थो में वरीयता क्रम में सर्वप्रथम दही के प्रयोग को ही महत्वपूर्ण एवं रुचिकर बताकर पौराणिक मान्यता प्रदान की है ।

आहार विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि एक स्वस्थ बालक की आंतों में दही को जन्म देने वाले कीटाणुओं के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के कीटाणु ही नहीं होते हैं । किन्तु उसकी आयुवृद्धि के साथ-साथ दही उत्पादक कीटाणुओं की संख्या निरन्तर घटती चली जाती है । यही कारण है कि बड़ी उम्र के लोगों को दूध देर से पचता अथवा पेट में सड़न पैदा करता है । इसलिये दूध की अपेक्षा दही को स्वास्थ्य संरक्षण के लिए अधिक लाभकारी माना गया है ।

दूध पेट में पहुंचकर दही के रूप में ही जमता है और अपनी प्रभाव शीलता का परिचय देता है । लेकिन दही में सुपाच्यता का गुण होने के कारण पेट को वैसी क्रिया सम्पन्न करने में अतिरिक्त भार उठाना नहीं पड़ता । इसलिये जिन्हें दूध नहीं पचता है उन्हें दही सरलता पूर्वक पच जाता है । वैज्ञानिकों द्वारा किये गये परीक्षणों से एक ही तथ्य हाथ लगा है कि दही का 70 प्रतिशत भाग शरीर को पोषक तत्व प्रदान करने के काम आता है जबकि दूध का 20 प्रतिशत हिस्सा ही इस उद्देश्य को पूरा कर सकने में सक्षम हो पाता है । दूध में कैसीन प्रोटीन और दही में लैक्टिकएसिड बैक्टीरिया होता है । कैसीन को जमाने में लैक्टिक एसिड ही काम आता है । इस समूची रासायनिक क्रिया का पूरा करने में कुछ अतिरिक्त गुण भी उत्पन्न हो जाते हैं । यानी दही में कैल्शियम की मात्रा दूध से ठीक 18 गुना अधिक होती है । इतना ही नहीं दही में समाविष्ट लैक्टिक एसिड जमाने वाले बर्तन की धातु से सूक्ष्म गुणों को भी सोख लेता है जो आरोग्य एवम् दीर्घायु का कारण बन जाते हैं अतः मिट्टी के बर्तन में दही जमाना अधिक श्रेयस्कर है । दूध को लम्बे समय तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता, पर दही को रखने में वैसी कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती है । दूध की चिकनाई से रक्त में कोलोस्ट्रॉल (घुलनशील चर्बी) की मात्रा बढ़ती और हृदयरोग का कारण बन जाती है । दही में ऐसा नहीं होता इसलिये हृदय एवं रक्त चाप (ब्लडप्रेशर) के रोगी को दही सेवन का परामर्श चिकित्सक देते रहे हैं ।

जिन देशों की आहार व्यवस्था के अन्तर्गत् विविध विधि भोज्य पदार्थों में दही को प्राथमिकता दी गई है वहां पर स्वास्थ्य का स्तर भी सुधरा है और दीर्घ जीवन की संभावनाएं भी बढ़ी हैं । रूस के जार्जिया प्रदेश की 50 लाख की आबादी में लगभग 70 हजार से भी अधिक लोग ऐसे हैं जो अपने जीवन के 100 वर्ष बड़ी प्रसन्नता और स्वस्थता के साथ पूरे कर चुके हैं । इसके बाद बुल्गारिया का नम्बर आता है जहां पर 100 वर्ष तक जीना तो जीवन की सहज स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है। इस दीर्घायु का कारण दही ही तो है ।

आयुर्वेद शास्त्र में दही को पाचक, रक्त शोधक, हृदय व मस्तिष्क को शीतलता शांति प्रदान करने वाला, यकृत की क्षमता में वृद्धि करने वाला, वात, कफ, नाशक औषधि के रूप में वर्णित किया गया है । अपच, अतिसार, प्रमेह और श्वेत कुष्ठ में तो यह बड़ा ही प्रभावकारी सिद्ध होता है । यही कारण है कि दही का नियमित सेवन करने वाले सदैव स्वस्थ-सानन्द बने रहते है । प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान (आहार शास्त्री) 'गेलार्ड हासर' ने अपने कथन में कहा है - "जो बहुत दिनों तक जीना चाहते है वे दही जरूर खाएँ ।"

'मनोहर आश्रम' स्थान-उम्मेदपुरा,
पो. तारापुर (जावद)-४५८ ३३०
जिला - नीमच (मध्यप्रदेश)
चलभाष - ०८९८७-४२०४७

.....***.....

आर्य जगत के समाचार

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न श्री पूनम सूरी जी द्वारा अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि -

एक नये उत्साह, उमंग एवं उल्लास के साथ इस वर्ष टंकारा में ऋषि बोधोत्सव दिनांक 21 फरवरी से 28 फरवरी 2014 तक समारोह पूर्वक आयोजित किया गया । यजुर्वेद पारायण यज्ञ निरन्तर 27 फरवरी तक चलता रहा जिसमें आचार्य रामदेव जी के अतिरिक्त डॉ. सोमदेव शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचन एवं श्री सत्यपाल पथिक जी, श्री अमर सिंह आर्य एवं श्री जगत वर्मा के मधुर भजनों का आनन्द ऋषि भक्त लेते रहे ।

युवा उत्सव के रूप में आयोजित लेखन एवं तर्क-वितर्क प्रतियोगिता आयोजित की गई । युवा उत्सव में विजयी टीमों को भी पारितोषिक वितरित किये गये । युवा उत्सव के संयोजक श्री हंसमुख भाई परमार (ट्रस्टी) थे ।

ध्वजारोहण उपरान्त शोभायात्रा का शुभारम्भ श्री पूनम सूरी जी एवं श्रीमती मणी सूरी जी द्वारा ओ३म् ध्वज लहरा कर किया जिसमें सर्वप्रथम उपस्थित संन्यासीवृनद एवं उसके उपरान्त भारत वर्ष से पधारे ऋषि भक्तों ने अपने अपने आर्य समाज एवं संस्थाओं के बैनर पकड़े हुए थे ।

उसके उपरान्त माननीय श्री पूनम सूरी जी एवं श्रीमती मणी सूरी जी महर्षि जन्म गृह पर पहुंचे जहां उन्होंने महर्षि के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और वहां पर आगन्तुक पुस्तिका में अपना सन्देश लिखे । सन्देश लिखते हुए वे इतने भावुक हो गये की उनकी आंखों से अश्रु बहने लगे और उन्होंने वहां उपस्थित महानुभावों को कहा कि आप सभी मुझे एकान्त में छोड़ देवें ताकि मैं यहां से ऊर्जा प्राप्त कर सकूं ।

अपरान्ह विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन था जिसमें डी ए वी कालेज प्रबन्धकत्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री पूनम सूरी जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणि सूरी जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए । इस अवसर पर ट्रस्ट की ओर से श्री लघाभाई पटेल जी ने पुष्प मालाओं से उनका स्वागत किया । इसी अवसर पर इस वर्ष के अलंकरण समारोह में टंकारा रत्न के रूप में श्री हंसमुख परमार (टंकारा) को, टंकाराश्री श्रीमती उम्मा वर्मा (दिल्ली) को एवं टंकारामित्र श्री नानजी भाई हापलिया (राजकोट) को दिया गया । इसके साथ ही स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान श्री स्वामी सुधानन्द सरस्वती (उड़ीसा) को दिया गया ।

इस अवसर पर श्री एस.के. शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डॉ. सोमदेव शास्त्री द्वारा महर्षि दयानन्द जी के प्रति प्रवचनों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई जिससे पधारे हुए आर्य महानुभाव बहुत ही प्रभावित हुए ।

अन्त में श्री पूनम सूरी जी अपने वक्तव्य में आश्वासन दिया कि टंकारा को विश्वदर्शनीय बनाने में डी.ए.वी. एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से पूर्ण सहयोग दिया जायेगा । इस श्रंखला में उन्होंने पाँच लाख का चैक टंकारा कार्यो के लिये आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से टंकारा ट्रस्ट को भेंट किया जिसका पधारे हुए आर्य जनों ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया ।

.....***.....

वैदिक आध्यात्मिक न्यास अजमेर का वार्षिक सम्मेलन -

वैदिक आध्यात्मिक न्यास, अजमेर का द्वितीय वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं संगोष्ठी 7-8-9 फरवरी 2014 को उसके उपकार्यालय वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुये ।

दिनांक 7 फरवरी को आचार्य ज्ञानेश्वर जी की अध्यक्षता में 9:30 से 11:30 बजे तक के उद्घाटन सत्र में ईश्वर के मुख्य निज नाम 'ओ३म्' के तीन बार भावपूर्ण उच्चारण के साथ संगोष्ठी का शुभारम्भ हुआ । सत्र का संचालन आचार्य सोमदेव जी ने किया। सर्वप्रथम न्यास के सचिव आचार्य सत्यजित् जी ने सबका सस्नेह स्वागत किया । तदुपरांत न्यास के संरक्षक एवं दिशा निर्देशक पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने अपने आध्यात्मिक उपदेश में सभी सदस्यों से आत्मोन्नति करते हुये वैदिक योग का प्रचार-प्रसार करने का आह्वान किया । उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के इतिहास में प्रथम बार एक सौ से ज्यादा दर्शन आदि शास्त्रों के विद्वान् एक संगठन-सूत्र में बंधे हैं ।

दूसरे सत्र का विषय था सृष्टि संवत् 1 अरब 97 करोड़ वर्ष वाला उचित है या 1 अरब 96 करोड़ वर्ष वाला ? ब्र. अरूण जी, आचार्य सनत्कुमार जी व आचार्य आनन्द प्रकाश जी को 1 अरब

97 करोड़ वर्ष का पक्ष मान्य था । इनका मानना था कि 1000 चतुर्युगियों की एक सृष्टि होती है जिसमें तीन-तीन चतुर्युगियां क्रमशः सृष्टि-निर्माण और विनाश होने में लगती हैं । आचार्य रवीन्द्र जी को विभिन्न प्रमाणों से 1 अरब 96 करोड़ वर्ष का पक्ष मान्य था । आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने कहा कि अपनी-अपनी जगह दोनों ठीक हैं-प्रथम जहाँ जीवोत्पत्ति का समय है, वहीं द्वितीय मानव एवं वेदोत्पत्ति का ।

तीसरा जिज्ञासा समाधान का सत्र रात्रि 8:00 से 9:30 बजे तक चला जिसकी अध्यक्षता आचार्य सत्यप्रकाश जी ने की व संचालन आचार्या सुखदा जी ने किया । कारण शरीर का स्वरूप क्या है ?-इस जिज्ञासा का समाधान करते हुये श्री रामचन्द्र जी (सोनीपत) ने पूर्वापर प्रसंग के अनुसार इसे मूल-प्रकृति बताया और आचार्य सत्यजित् जी ने सप्रमाण ईश्वर को ही सभी जीवों का कारण शरीर बताया । मिथ्या-ज्ञान कहाँ रहता है ?-इसके उत्तर में आचार्य आनन्दप्रकाश जी ने कहा कि यह कहीं रहता नहीं अपितु जीव के अल्पज्ञ होने के कारण प्रकृति के सम्पर्क में जीव के आने पर जीव में उत्पन्न होता है । स्वामी वेदपति जी के कर्मफल व ईश्वर-कृपा विषयक प्रश्न का और श्री राजेश जी भागवत के उपासना विषयक प्रश्न का भी विद्वानों-साधकों द्वारा समाधान का प्रयास किया गया ।

8 फरवरी को प्रातः यज्ञोपरांत स्वामी सत्यपति जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मनुष्य जीवन की सफलता ईश्वर-प्राप्ति कर लेने में ही है ।

आत्मा का स्वरूप विषयवाला चौथा सत्र प्रातः 9:30 से 11:30 बजे तक चला, जिसकी अध्यक्षता आचार्य आनन्दप्रकाश जी ने व संचालन आचार्य सनत्कुमार जी ने किया । सभी वक्ताओं ने आत्मा को सप्रमाण निराकार सिद्ध किया ।

मोक्षपूर्ण कर्माशय की स्थिति विषयक पांचवाँ सत्र 2:00 से 4:00 बजे तक चला जिसकी अध्यक्षता स्वामी ऋतस्पति जी ने की व संचालन आचार्य शीतल जी ने किया । आचार्य सत्यजित् जी आचार्य शीतल जी ने मोक्ष में जाने के पूर्व कर्माशय की पूर्ण समाप्ति हो जाने के पक्ष में तथा आचार्य सत्येन्द्र जी व आचार्य आनन्दप्रकाश जी ने कर्माशय की पूर्ण समाप्ति न होने के पक्ष में अपने प्रमाण प्रस्तुत किये ।

कोई नया कार्य, विचारादि विषयक छठा सत्र रात्रि 8:00 से 9:30 बजे तक चला, जिसकी अध्यक्षता स्वामी अमृतानन्द जी ने की तथा संचालन आचार्य हरीश जी ने किया । अपनी सम्मति व्यक्त करते हुये स्वामी अमृतानन्द जी ने अधिकाधिक योग शिविरों के आयोजन की आवश्यकता बताई । अरूण जी ने ऋषि प्रदर्शित ध्यान-योग पाठ्यक्रम विकसित करने की सूचना दी ।

जीवाणु व विषाणु आदि सजीव हैं या निर्जीव तथा ये भोग शरीर हैं या नहीं?-इस विषय वाला सातवाँ सत्र अन्तिम दिन प्रातः 8:30 से 11:30 बजे तक चला जिसके अध्यक्ष आचार्य आनन्दप्रकाश जी व संचालक आचार्य आशीष जी थे । विषय पर विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये । सबने जीवाणु आदि को सजीव माना तथा हानि पहुँचानेवाले जीवाणुओं आदि को नष्ट करने की वेदाज्ञा होने के कारण पाप न लगने के विचार प्रस्तुत किये । विषाणु (वायरस) को सजीव या निर्जीव मानने पर मतैक्य नहीं हो सका।

आठवाँ समापन सत्र 2:00 से 4:00 बजे तक चला जिसकी अध्यक्षता आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने की व संचालन आचार्य सत्यजित् जी ने किया । पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि संगठित रहकर ही आप अपना तथा संसार का सर्वाधिक उपकार कर सकते हैं । आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने कहा कि न्यास के उद्देश्यों को सदा स्मरण रखते हुये हम पुरूषार्थ करते रहें ।

.....***.....

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी वेद वेदांग गौरव सम्मान से सम्मानित -

विलक्षण प्रतिभा के धनी, उच्चकोटि के वैदिक चिंतक, अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्यसमाज महावीर नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित भव्य सत्संग समारोह में 'वेद वेदांग गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया ।

समारोह के अध्यक्ष श्री ओ.पी. बब्बर जी (विधायक) मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य जी (चेयरमेन एवं निगम पार्षद) श्री राजीव जी (प्रवक्ता-भाजपा, दिल्ली प्रदेश) समाज प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी जी आदि ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को शाल, पुष्पमाला, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया । यह सम्मान आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी की वैदिक धर्म प्रचार की सफल कनाड़ा यात्रा की सम्पन्नता के पावन पर्व पर उन्हें प्रदान किया गया ।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि आचार्य श्री हम सबके प्रेरणास्त्रोत हैं। वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं समाज सेवा में संलग्न आचार्य श्री की विद्वत्ता, साधुता, श्रेष्ठ जीवन पर हमें गर्व है। कनाडा में पहली बार आचार्य श्री ने 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कराकर एक इतिहास रचा है। ऐसे विद्वान का सार्वजनिक अभिनन्दन करने में स्वयं को हम गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विराट जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य की सफलता का रहस्य उसके रंग, रूप, गोरे, या काले होने में नहीं, आन्तरिक गुणों में निहित है। जिसके पास जितनी आन्तरिक ऊर्जा होगी वह व्यक्ति जीवन में उतना ही अधिक सफल होगा। सफलता को पाने के लिए धैर्य, आत्मसंयम, परिश्रम, दृढ़ विश्वास, लगन, कार्य के प्रति निष्ठा, त्याग, तपस्या, सूझबूझ, बुद्धिमता, दूसरों के प्रति सम्मान की भावना, कृतज्ञता, ईश्वर में विश्वास आदि का होना नितान्त आवश्यक है। हम जितना भी जी सकें अच्छी तरह से जिएँ। लोगों के साथ जियें। लोगों के लिए जियें। लोग हमारे लिए जियें।

कार्यक्रम के अध्यक्ष लोकप्रिय विधायक श्री ओ.पी. बब्बर जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी निःस्वार्थ समाज सेवी, उत्कृष्ट प्रवचन कर्ता, मानवीय गुणों के आगार, निष्कपट एवं कर्मठ जीवन व्यतीत करने वाले अत्यन्त लोकप्रिय वैदिक विद्वान हैं। आज इनके सारगर्भित वेदमंत्रों की व्याख्या को सुनकर मैं भावविभोर हो गया। आचार्य श्री जो भी मुझे सेवाकार्य देंगे। मैं उसे करने के लिए सदा तैयार हूँ।

इस शुभ अवसर पर लोकप्रिय निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य जी प्रख्यात् वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने समवेत रूप से महर्षि दयानन्द चैरिटेबल डिस्पेन्सरी और डायग्नास्टिक सैन्टर का उद्घाटन किया।

.....***.....

त्रि-दिवसीय (२१.२२.२३ फरवरी २०१४) निःशुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर, अम्बाला (हरियाणा) दिनांक २३ फरवरी २०१४ को प्रातः १०:३० बजे सम्पन्न हुआ -

हरियाणा राज्य के प्रसिद्ध नगर अम्बाला में सैंकड़ों सपत्निक यजमानों व अन्य यजमानों तथा श्रोतागण की उपस्थित में **पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, दर्शनाचार्य** वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) के निर्देशन व ब्रह्मत्व में शिविर सम्पन्न हुआ। पूज्य आचार्य श्री जी ने इन दिनों के दौरान यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्व तथा रहस्यों की वैज्ञानिक विवेचना की। साथ में सपत्निक यजमानों (शिविरार्थियों) को यज्ञ मंत्रों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया। यज्ञ को लेकर विशेष शंकाओं का समाधान भी कराया गया। उन्होंने कहा यज्ञ से लोगों में कल्याण की भावना उत्पन्न होती है तथा अच्छे कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति लोगों के कर्तव्यों के पालन पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि वैदिक सभ्यता और संस्कृति ही भारत की संस्कृति है। वेद मार्ग पर चलने से ही विश्व में शन्ति हो सकती है। उन्होंने ने कहा कि जब से हमने स्वयं को ईश्वर और यज्ञ से अलग कर लिया है- तब से ही हम अशांत, दुखी, परेशान, भयभीत.... आदि हैं। अन्तिम दिन उन्होंने शिविरार्थियों से दक्षिणा रूप में प्रतिदिन/साप्ताहिक यज्ञ करने का संकल्प भी लिया। लगभग 80/90 शिविरार्थियों ने बड़ी श्रद्धा व उत्साह से अपना संकल्प आचार्य प्रवर को दिया।

अन्त में शिविर के समापन अवसर पर महात्मा वेदपाल आर्य-अध्यक्ष सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास ने तथा शिविर संयोजक श्री राजेश बत्तरा जी ने परमपिता परमात्मा का विशेष धन्यवाद करते हुए एवं पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, विद्वानों, विशिष्ठ अतिथियों, बह्मचारीगण, सभी आर्यसमाजों, अन्य संस्थाओं, यजमानों, श्रोताओं, कार्यक्रताओं, स्वयंसेवकों तथा दानी मानुभावों के प्रति धन्यवाद व आभार प्रकट करते हुए कृतज्ञता प्रकट की।

.....***.....

मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तार चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसके मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है।

दयानन्द सरस्वती

सभाक्षेत्र के समाचार व सूचनाएं

नव संवत्सर २०७१ एवं आर्यसमाज के १४० वें स्थापना दिवस का आयोजन सम्पन्न

जबलपुर । आर्य समाज दयानन्द भवन में नव संवत्सर तथा आर्य समाज के 140 वें स्थापना दिवस का आयोजन सामाजिक कार्यकर्ता श्री अमरनाथ शर्मा की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ । प्रमुख वक्ता थीं डॉ. श्रीमति ईश्वर मुखी जो कि प्रमुख शिक्षा शास्त्री हैं तथा महिला कल्याण के कार्य में विशेष रूचि लेती हैं । आपने कहा कि गत 140 वर्षों से आर्य समाज शिक्षा, सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना फैलाने अंध विश्वासों तथा रूढ़िवादिता आदि को दूर करने के लिए लगातार कार्य कर रहा है । आपने आगे कहा कि इसी प्रकार वैयक्तिक जीवन को ऊंचा उठाने के लिए योग आदि के प्रचार का कार्य कर रहा है । आपने उपस्थित लोगों को कहा कि जहां हमें अपने जीवन के उत्थान के लिए कार्य करना है वहां हमें सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए भी प्रयत्नशील रहना होगा । आर्य समाज को संगठित हो कर समस्याओं को सुलझाने के लिए जागरूकता से कार्य करना होगा ।

आर्यसमाज गोरखपुर के पुरोहित श्री सूर्यकान्त सुमन द्वारा प्रेरणा दी गई कि हमें अपने संवत्सर को व्यवहारिक रूप से लोकप्रिय बनाना चाहिए । आर्यसमाज दयानन्द भवन, के आचार्य श्री वीरेन्द्र पाण्डे द्वारा बताया गया कि हमें अपनी संस्कृति तथा उसके क्रिया-कलापों को स्वीकार कर तथा उसके अनुसार अपने जीवन को चलाना होगा । इसी से हम व्यक्तिगत क्लेशों को दूरकर सकते हैं तथा अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं । आगे हम अपनी संस्कृति को अपनी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं ।

इस अवसर पर सर्व श्रीमति स्नेहलता शर्मा, विमला सैनी, पूनम माहेश्वरी, समिता जग्गी, एकता कोचर आदि द्वारा तथा सर्वश्री जंगदीश मित्र कुमार, कैलाश आर्य, कुमारी अरूणा कुशवाहा आदि द्वारा सुन्दर भजन, गीत, कविताएं आदि प्रस्तुत की गई ।

कार्यक्रम का संचालन श्री जयसिंह गायकवाड़, प्रधान आर्य समाज, गंजीपुरा तथा आभार प्रदर्शन मंत्री आर्य समाज श्री राजाराम आर्य द्वारा किया गया ।

इस अवसर पर सर्वश्री रोशन लाल संघी, पीयूष शर्मा, ब्रजमोहन नेहरा, अशोक नेहरा, देवेन्द्र माहेश्वरी, के.डी. कौशल आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही । फोटो आवरण पृष्ट (पिछला) पर दृष्टव्य है ।

अमरावती प्रथम जन्मदिन संपन्न

सभा के लेखा-निरीक्षक भी रमेशपंत घोडसकर के पौत्र चि. श्रावण का प्रथम जन्मदिन सोल्लास मनाया गया । प्रातः पं. सत्यवीर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में बृहद्-यज्ञ संपन्नकर-भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम संपन्न किया गया । "वैदिक यज्ञ की विशेषता पर" प्रा. अमोल देवले एवं श्री. मधुकर आर्य ने जनता को प्रभावित किया । इस अवसर नगर ग्राम के लगभग पाँच सौ लोग उपस्थित थे । श्री रमेशपंत घोडसकर ने आभार प्रदर्शन किया ।

अमरावती -१५ फरवरी

अमरावती के लोकप्रिय बीमा एजेंट एवं आर्यसमाजी श्री अनील कुमार चंदनलालजी इरवाणी ने जात-पंचायत का बधंन होने पर भी अपने नएँ अपार्टमेंट में वास्तुसंस्कार पौराणिक पंडित से न करवाकर वैदिक पं. सत्यवीर शास्त्री से संपन्न करवाया । इस अवसर बड़ी मात्रा में कपड़ा व्यवसायी उपस्थित थे । यज्ञ-भजन प्रवचन शांतिपाठ संपन्न हुआ ।

नागपुर-१९ फरवरी शुद्धि एवं विवाह संस्कार

बौद्ध धर्मीय शुभांगी को वैदिक धर्म में दिक्षित करने के उपरान्त उसका विवाह संस्कार प्रोफेसर संजय मल्लपा रेड्डी के साथ पूर्ण वैदिक विधि से नागपुर में पं. सत्यवीर शास्त्री जी के पौरोहित्य में संपन्न हुआ । इस अवसर पर एक हजार के लगभग प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे ।

बेलखेड़ । वैदिक कॉन्वेन्ट - २३ फरवरी

बेलखेड़ वैदिक कान्वेन्ट का वार्षिक स्नेह सम्मेलन श्री गजानन भाऊ उंबरकार जि.प. सदस्य की अध्यक्षता में पं. सत्यवीर शास्त्री, पं. रमेशपंत घोडसकर नजमुन्नीसा ग्रा. पं. सदस्या, प्रा. अरविंदजी गीरे की प्रमुख उपस्थिति में संपन्न हुआ । छात्रों के विविध मनोरंजन कार्यक्रमों से जनता हँसी से लोट पोट हो गई । श्री शांतारामजी गोमासे ने सब का आभार माना एवं शांतिपाठ के साथ स्नेह-सम्मेलन समाप्त हुआ ।

आर्य समाज उमरखेड़ में दयानन्द बोधोत्सव सम्पन्न

दि. 27.2.14 को आर्य समाज के पूर्व प्रधान के देहावसान के कारण 1.3.14 को बोधोत्सव का आयोजन किया गया । यज्ञ के उपरान्त श्री राममाऊ मुंगे ने अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने मत मतान्तरों की जाल में फंसे समाज के वेदज्ञान प्रदान करते हुए तदनुसार अपने जीवन के निर्माण के लिए प्रेरणा प्रदान कीं । आपने आगे कहा कि सन्ध्या व हवन करने वाले व्यक्ति से मूर्ति पूजा स्वयं छूट जाती है । आर्य समाज के प्रभाव में आकर बिड़ी, सिगरेट, मद्य, मादक द्रव्य आदि दुर्गुण छूट जाते हैं । आर्य

समाज केवल समाज सुधारक संस्था ही नही है वह आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाती है । श्री मोयर गुरू जी ने आभार प्रदर्शन करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति एक एक व्यक्ति को सत्संग में लाए तो समाज की उन्नति हो सकती है । श्री रामभाऊ मुंगे द्वारा बताया गया कि सभा को आर्य सेवक के लिए रू. 2150/- भिजवाये गये हैं ।

.....***.....

आर्य समाज कारंजा (लाड) में ऋषि दयानन्द की स्मृति में बोधरात्री का पर्व शिवरात्री को बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया । महर्षि के जीवनी तथा जीवन कार्य का अवगाहन कर अनेक प्रेरक घटनाओं को श्री राम सिंह जी ठाकुर द्वारा स्मरण कराया गया । तथा उसी तिथि पर कारंजा में ही नव निर्मित वास्तु ''वारकरी भवन'' में बृहद् यज्ञ कराके वैदिक सिद्धान्तों को प्रकाशित किया गया । अनुमानतः 20 लाख रू. से निर्मित इस भवन के निर्माण तथा लोकार्पण कार्यक्रम में दो हजार श्रद्धालु उपस्थित थे ।

.....***.....

आ.स. बोरी (अरब) के संस्थापक सदस्य स्व. भनीरामजी लढ्ढा जी के सुपुत्र श्री रामकिशोर जी लढ्ढा का स्वर्गवास हुआ । उनकी अन्त्येष्टि, सभा उपमंत्री श्री रामसिंह जी ठाकुर के मार्ग दर्शन में पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न हुयी । शान्ति यज्ञ के उपरान्त आ.प्र. सभा के ओर से श्रद्धान्जलि दी गयी । परिवार में शांन्ति कथा का आयोजन हुआ तथा दिवंगत आत्मा के सद्गति के लिये प्रार्थना की गयी ।

आ.स. कारंजा (लाड) के प्रधान श्री साजनदास जी जवाहर मलानी जी के तत्वावधान में, सदस्यों के निवासों पर दो जगह बृहद् यज्ञों का आयोजन तथा सत्संग तथा वैदिक सिद्धान्तों का उद्घाटन हुआ । उसमें (1) यज्ञ ही क्यों ? (2) अंधश्रद्धा एक जागतिक समस्या आदि लघु पुस्तिकाओं का वितरण हुआ ।

दो स्थानों पर व्यापारिक प्रतिष्ठाणों का शुभारंभ यज्ञ के पश्चात् वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन से और सत्संग से हुआ । दो सज्जन, आर्य समाज के प्रचार कार्य में जुड़ गये यह उपलब्धि हुयी । उनका नाम श्री दुबे जी तथा केवल राम पंजवाणी जी । दुबेजी व्यवसाय से अग्रेंजी के निवृत्त प्रोफेसर हैं तथा स्वाध्याय के इच्छुक हैं ।

.....***.....

महाशिवरात्रि ऋषि बोधोत्स पर्व

आर्य समाज गाँधीनगर इटारसी के तत्वाधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव पर्व 27 फरवरी को मनाया गया । जिसमें आर्य समाज मंदिर में यज्ञ किया गया, एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर व्याख्यान दिये गये । आर्य समाज के आचार्य पं. वेदरत्न आर्य ने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती को महाशिवरात्रि के दिन 14 वर्ष की आयु में वास्तविक शिव (परमात्मा) का बोध हुआ था, इसलिए आर्य समाज में आज के दिवस की महर्षि दयानन्द बोधोत्सव पर्व (दिवस) के रूप में मनाया जाता है । कार्यक्रम में आर्य समाज के सदस्यगण उपस्थित थे, पं. ओमदेव आर्य, पं. रूपेश शास्त्री जी, रोहित आर्य, दिनेश आर्य, रविन्द्र आर्य, राजेश देवानी, माया देवी आर्य आदि सज्जन उपस्थित रहे ।

पृष्ठ 15 का शेष भाग .....

''मातृदेवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव'' आदि पुण्यप्रद भावों को समाप्त कर दिया । जिन माता-पिता आदि की कृपा से स्नेह से, सहयोग से, समर्पण भाव से हम इतने बड़े, सामर्थ्यशाली बने हैं, उनकी उपेक्षा करने वाले उनका यथोचित सत्कार न करने वाले क्या हम ईश्वर भक्त हो सकते हैं ? अतः जड़ मूर्ति की इस अवैज्ञानिक पूजा को त्यागकर जीवित चेतन माता-पिता तथा वृद्धजनों का आदर करना चाहिए । सत्य तो यह है कि इन अवैज्ञानिक अन्धविश्वासों को त्याग कर जीवित चेतन सत्य तो यह है कि इन अवैज्ञानिक अन्धविश्वासों को त्याग कर हमें वेद मार्ग का अनुसरण करना चाहिए-संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि ।(अथर्व १-१-४) सन्त तुलसीदास 'रामचरित मानस' में लिखते हैं- वरनाश्रम निज-निज धरम निरत वेद-पथ लोग । चलहिं सदा पावहिं सुखहिं न भय शोक न रोग और भी - सब नर करहिं परस्पर प्रीति । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीति ।।

युगों तक भारतीय जन वेद के शाश्वत सत्य वैज्ञानिक मार्ग पर चलते रहे, तब भारत ने विश्व गुरू की गौरव मय संज्ञा प्राप्त की थी। मनु ने घोषणा की - एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।। भारतीय श्रेष्ठ जनों से भूमण्डल के सभी मानवों ने चरित्र की शिक्षा प्राप्त की । जब हम वेद वर्णित वैज्ञानिक सत्य मार्ग पर चलते रहे तभी आदर्श राम राज्य की स्थापना कर सके थे ।

वर्तमान में छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ वृत्ति, भोग भावना तथा संग्रह वृत्ति की भावना हमारे अन्दर व्याप्त है साथ ही भाई-भाई का विरोध, वृद्धजनों की उपेक्षा वृत्ति, असुरक्षा का भाव यह सब अवैज्ञानिक अन्धविश्वासों की देन है । बड़े बड़े शिक्षित व्यक्ति, पंडित समुदाय, वैज्ञानिक, शासक वर्ग भी इस अवैज्ञानिक मार्ग पर चल रहे हैं । वेद के शाश्वत् सत्य मार्ग पर चलने के लिए अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए हमें एक बार स्वामी दयानन्द लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन करना चाहिए ।

५, सीताराम भवन, फाटक आगरकैण्ट २८२००१
मो. ०८९०९३४७३२९

.....***.....

आर्य समाज आराधना मंदिर, वर्धा के पदाधिकारी एवं अंतरंग सभा सदस्य

एड. अरुण पुरेकर
प्रधान

ताराचंद चौबे
मंत्री

सुभाष राठी
उपप्रधान

सी.ए. प्रवीण पटनी
कोषाध्यक्ष

डॉ. राजेन्द्र पुन्से
उपप्रधान

शैलेन्द्र दफ्तरी
उपप्रधान

नरेन्द्र डोकवाल
उपमंत्री

महेश पोद्दार
सदस्य

किशोर पंचसरा
सदस्य

छगन बत्रा
सदस्य

अशोक अग्रवाल
सदस्य

पुखराज पंचारिया
सदस्य

संजय ओझा
सदस्य

कृष्णकान्त चौबे
सदस्य

सुरेश वारे
सदस्य

मनीष जालान
सदस्य

विनोद व्यास
सदस्य

आर्य सेवक, नागपुर

प्रति, _____

_____

जबलपुर नगर की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से आयोजित आर्य समाज स्थापना दिवस

फोटो में जयसिंह गायकवाड़, प्रधान आर्य समाज गंजीपुरा, आर्य समाज दयानन्द भवन के आचार्य श्री धीरेन्द्र पाण्डेय, प्रमुख वक्ता डॉ. ईश्वर मुखी, श्री अमरनाथ शर्मा – प्रधान आर्य समाज, दयानन्द भवन, आर्य समाज गोरखपुर से पुरोहित श्री सूर्यकान्त सुमन तथा काव्य पाठ करते हुए श्री जगदीश मित्र कुमार –अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य सभा

(समाचार पृष्ठ २१ पर देखें)

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोन: 0712–2595556 द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761–4035487